



भारतीय ज्ञान समाधान

शाश्वत ज्ञान, अनंत संभावनाएँ

मासिक पत्रिका
द्वितीय अंक | सितम्बर 2026
RNI-CTBIL/26/A5037

आवरण कथा

पश्चिम से संतुलन, पूरब से संवादः

ब्रिक्स में दिखा भारत का कूटनीतिक 'मास्टरस्ट्रोक'



पृष्ठ 09-11
ताड़पत्रों में छुपा भविष्यः
AI ने खोले सदियों पुराने
रहस्य

पृष्ठ 12-14
सरकारी सेवा में आवेदन की आयु 45 वर्षः
अवसर और प्रभाव

पृष्ठ 15-17
नेपाल की त्रासदीः
आज बाढ़ का डर, कल पानी का संकट?



सेवा के
25 वर्ष
सुशासन • विश्वास • जनसेवा • राष्ट्र निर्माण

सेवा संकल्प आभियान

17 सितंबर से 17 अक्टूबर 2025



अनुक्रमणिका



04 | संपादकीय

बदलते समय में ज्ञान, विवेक और भारत की दिशा

05-08 | आवरण कथा

पश्चिम से संतुलन, पूरब से संवाद:

ब्रिक्स में दिखा भारत का 'मास्टरस्ट्रोक'



09-11 | भारतीय ज्ञान एवं डिजिटल तकनीक

ताड़पत्रों में छुपा भविष्य:

जब AI खोल रहा है सदियों पुराने रहस्य

12-14 | छत्तीसगढ़ विशेष

38 से 45 वर्ष: आयु-सीमा में बदलाव,

पात्रता और अवसर



15-17 | पर्यावरण हिमालय की चेतावनी:

नेपाल की आपदा से भारत के लिए सबक



18-19 | शिक्षा

तनाव के बीच विवेक, सफलता के बाद संवेदना

20-23 | स्वास्थ्य एवं जीवनशैली

वात-पित्त-कफ

24-25 | समाज एवं नागरिक जीवन

सड़क पर इतना गुस्सा क्यों?

छोटी तक़रार से हिंसा तक

26 | समसामयिकी | हनुमान अंश

27 | सदस्यता एवं पाठक संपर्क

सदस्यता • लेख-प्रेषण • प्रकाशन घोषणा



डॉ. अनुज कुमार नारद
संपादक

सदस्यता एवं पाठक संपर्क

सदस्यता व संस्थागत प्रतियों के लिए संपर्क करें।

9111511188

info@bhartiyagyansamadhan.in

विस्तृत जानकारी — पृष्ठ 27



सदस्यता फॉर्म के लिए स्कैन करें

प्रकाशन विवरण

भारतीय ज्ञान समाधान | द्वितीय अंक • सितंबर 2026
हिन्दी एवं अंग्रेजी • मासिक | मूल्य ₹20/-

प्रकाशक एवं संपादक: डॉ. अनुज कुमार नारद
स्वामी: Association of Multi Skilled Professionals
Bhilai, Durg, Chhattisgarh-490023
प्रकाशन कार्यालय: 11/A, Street 36, Sector 5, Bhilai
Nagar, Durg, Chhattisgarh-490006

मुद्रक: Vikas Shrivastava

मुद्रणालय: Vikash Press, 208 Akashganga, Supela,
District Durg, Chhattisgarh-490023

PRGI पंजीयन क्रमांक: CTBIL/26/A5037

9111511188 | info@bhartiyagyansamadhan.in
bhartiyagyansamadhan.in

पूर्ण प्रकाशन घोषणा एवं संपादकीय नीति — पृष्ठ 27

बदलते समय में ज्ञान, विवेक और भारत की दिशा

यह अंक आपके हाथ में एक साथ कई भारत रखता है। एक भारत वह है जो भारत मंडपम में बैठकर तय करता है कि अमेरिका, रूस, चीन और यूरोप के बीच अपना रास्ता कैसे बचाए। दूसरा भारत वह है जो ताड़पत्रों पर लिखी हजार साल पुरानी इबारत को AI की मदद से फिर से पढ़ने की कोशिश कर रहा है। एक तीसरा भारत हमें छत्तीसगढ़ के उस कर्मचारी में दिखता है जिसकी उम्र-सीमा सात साल बढ़ी है, और एक चौथा उस विद्यार्थी में जो परीक्षा-कक्ष में बैठकर यक्ष के प्रश्नों जैसी ही किसी चुनौती से जूझ रहा है। भाषा, भूगोल और सन्दर्भ अलग हैं, पर सबके केंद्र में एक ही सवाल है — बदलाव के बीच हम अपना विवेक कैसे बचाए रखें।

‘विवेक’ शब्द कहना आसान है, पर उसका अर्थ हर परिस्थिति में शांत बने रहना या निर्णय टाल देना नहीं है। BRICS पर हमारा लेख जिस ‘रणनीतिक स्वायत्तता’ की बात करता है, वह भी विवेक का ही एक रूप है—अपने विकल्पों पर किसी एक पक्ष का नियंत्रण स्वीकार न करना और परिस्थिति के अनुसार संतुलित निर्णय लेना। सड़क पर गुस्से से जुड़ा हमारा लेख भी मूलतः यही बात कहता है; बस संदर्भ बदल जाता है। वहाँ चुनौती यह है कि तीस सेकंड के आवेश में वह विवेक न खो जाए, जो पूरी जिंदगी की दिशा बदल सकता है। और यक्ष-युधिष्ठिर संवाद हमें याद दिलाता है कि यह कोई नई खोज नहीं है; हमारी परंपरा सदियों से ज्ञान, संयम और सही निर्णय के इसी संतुलन की बात करती आई है—चाहे कूटनीति की मेज हो, सड़क का तनाव हो या परीक्षा की कॉपी।

इसी अंक में हम यह भी देखते हैं कि ज्ञान का अर्थ केवल पुरानी किताबों में बंद रहना नहीं है। ताड़पत्रों को पढ़ने के लिए हम AI का सहारा ले रहे हैं, पर यह लेख साफ कहता है — तकनीक अक्षर पढ़ सकती है, अर्थ तय करना अब भी मनुष्य का काम है। यही बात हमारे वात-पित्त-कफ वाले लेख में भी झलकती है, जहाँ आयुर्वेद हमें कोई जादुई नुस्खा नहीं देता, बल्कि अपने शरीर और मौसम को समझने की एक दृष्टि देता है। आधुनिकता और परंपरा यहाँ प्रतिस्पर्धी नहीं, सहयात्री हैं — जैसा ‘हनुमान अंश’ की अप्रत्याशित सफलता भी दिखाती है, जहाँ नई पीढ़ी पुरानी आस्था को अपने ही तरीकों से खोज रही है।

पर इस अंक में एक याद और है, जो हल्की नहीं ली जा सकती। हिमालय से आई नेपाल की त्रासदी हमें बताती है कि प्रकृति के आगे मनुष्य का ज्ञान भी सीमित है, और असली विवेक शायद यही मानना है कि हर सवाल का उत्तर हमारे पास नहीं है — फिर भी तैयार रहना जरूरी है।

‘भारतीय ज्ञान समाधान’ का प्रयास यही है — कूटनीति से लेकर रसोई तक, नीति से लेकर मनोविज्ञान तक, हर विषय को उस एक प्रश्न से जोड़ना: क्या हम बदलते समय में भी अपनी दिशा और अपना विवेक साथ रख पा रहे हैं? हमें विश्वास है कि इसका उत्तर पाठकों के साथ मिलकर ही बेहतर बनता है।

डॉ. अनुज कुमार नारद | संपादक

पश्चिम से साझेदारी, पूरब से संवाद

BRICS 2026 में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता



दिल्ली में 18वें BRICS शिखर सम्मेलन, 12-13 सितंबर 2026

140 बिंदुओं वाली नई दिल्ली घोषणा से बड़ा सवाल यह है—क्या भारत ऐसी स्थिति बना रहा है जहाँ संबंध सबके साथ हों, लेकिन निर्णय भारतीय हित तय करें?

दिल्ली के भारत मंडपम में जब BRICS देशों के नेता एक मेज पर बैठे थे, तब चर्चा केवल संयुक्त राष्ट्र, डॉलर, युद्ध और वैश्विक संस्थाओं की नहीं थी। उसका रिश्ता उस भारतीय परिवार से भी था जो पेट्रोल भरवाता है; उस छोटे उद्योग से, जिसका उत्पाद विदेशी बाजार में जाता है; उस युवा उद्यमी से, जिसे पूंजी और नया बाजार चाहिए; और उस कारखाने से भी, जिसे critical minerals और electronic components की निर्बाध आपूर्ति चाहिए। यही BRICS 2026 को रोचक बनाता है। प्रश्न केवल यह नहीं कि सम्मेलन में कौन-सा प्रस्ताव पारित हुआ; बड़ा प्रश्न है—बदलती दुनिया में भारत अपने लिए कितनी निर्णय-स्वतंत्रता सुरक्षित कर सकता है?

Rule-taker से Rule-shaper तक

12-13 सितंबर को आयोजित 18वें शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता भारत ने की। प्रधानमंत्री ने Global South की स्थिति को इस तरह रखा कि जो देश संकटों की “front row” में होते हैं, वे निर्णय लेने की व्यवस्था में अक्सर “back row” में रहते हैं। उनकी प्रस्तावित दिशा थी—Global South को नियम मानने वाले से नियम गढ़ने वाले देशों की पंक्ति में लाना।

बीस वर्षों में BRICS ही नहीं, भारत भी बदला है

2006 के BRIC और 2026 के BRICS के बीच फर्क केवल सदस्य संख्या का नहीं है। भारत की आर्थिक क्षमता, digital infrastructure, international market presence और diplomatic reach भी बदली है। प्रधानमंत्री के अनुसार BRICS और उसके partners मिलकर विश्व की लगभग 50% आबादी, 40% GDP और 25% से अधिक global trade का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारत के सामने इसलिए सरल चुनाव नहीं है। अमेरिका बाजार और उच्च तकनीक में अहम है; यूरोप व्यापार, पूंजी और advanced manufacturing में; रूस energy और defence में; जबकि चीन प्रतिस्पर्धी होने के साथ industrial supply chains का बड़ा स्रोत भी है।

भारत की चुनौती किसी एक पक्ष को चुनना नहीं, बल्कि किसी एक शक्ति को अपने विकल्पों पर “veto” न देने की है।

BRICS भारत के लिए पश्चिम-विरोधी खेमे से अधिक अतिरिक्त बाजार, भुगतान-मार्ग और diplomatic bargaining space देने वाला मंच है।

100% TARIFF का का जोखिम: भारत कितनी कीमत पर अपनी पसंद बचाएगा?



“100%” की चेतावनी—पहले BRICS currency बहस, फिर Russian energy buyers पर tariff risk

BRICS की बहस में Donald Trump की तस्वीर सजावटी नहीं, संदर्भ समझने के लिए जरूरी है। फरवरी 2025 में उन्होंने चेतावनी दी थी कि यदि BRICS देश डॉलर को चुनौती देने वाली साझा currency की दिशा में बढ़ते हैं, तो उन पर 100% tariff लगाया जा सकता है। यह एक राजनीतिक चेतावनी थी; BRICS ने 2026 में कोई साझा मुद्रा घोषित नहीं की।

दो अलग “100%”— इन्हें मिलाना नहीं चाहिए

सितंबर 2026 में दूसरा, अधिक व्यावहारिक दबाव सामने आया। अमेरिका के नए Russia-Iran sanctions कानून ने राष्ट्रपति को रूसी oil या gas के महत्वपूर्ण buyers से आने वाले imports पर 100% तक tariff लगाने की व्यापक शक्ति दी। भारत के लिए यह सीधे energy security और US market access के बीच कठिन संतुलन का प्रश्न बन सकता है।

भारत दुनिया का बड़ा oil importer है। रूस से खरीद केवल राजनीतिक निकटता का विषय नहीं; कीमत, refinery economics, supply availability और domestic inflation भी उसके पीछे हैं। दूसरी ओर अमेरिका भारतीय exports का अत्यंत महत्वपूर्ण बाजार है। यानी नीति का एक निर्णय petrol pump से लेकर export order तक असर डाल सकता है।

भारत के लिए strategic autonomy का अर्थ “किसी के खिलाफ” होना नहीं; बाहरी दबाव के बीच अपने निर्णय की गुंजाइश बचाए रखना है।



BRICS के दौरान भारत-रूस संवाद: energy, defence, industry और strategic partnership

डॉलर हटाना नहीं—दूसरा रास्ता खुला रखना

New Delhi Declaration के para 90 में BRICS Payment Task Force, payment-system interoperability और BRICS local currencies में trade settlements व investments की संभावनाओं पर काम जारी रखने की बात है। साथ ही declaration साफ कहती है कि कोई “one-size-fits-all” मॉडल नहीं है।

यानी अभी न BRICS central bank है, न साझा currency, न डॉलर का तत्काल विकल्प। भारत के लिए उपयोगिता अधिक व्यावहारिक है: यदि किसी route पर sanction, banking restriction या transaction cost बढ़े, तो वैकल्पिक payment channel उपलब्ध हो। यह de-dollarisation के नारे से अधिक financial resilience का सवाल है।

Ukraine: घोषणा की अर्थपूर्ण चुप्पी

2026 की New Delhi Declaration में Ukraine का अलग उल्लेख नहीं है—जबकि Rio 2025 declaration में conflict का संक्षिप्त संदर्भ था। इसे किसी एक कारण से जोड़ना अनुमान होगा; पर इतना स्पष्ट है कि विस्तारित BRICS की सामूहिक भाषा वहीं तक जाती है जहाँ consensus संभव हो।

भारत की राष्ट्रीय भाषा इससे अलग और अधिक स्पष्ट रही। BRICS sidelines पर Vladimir Putin से बातचीत में प्रधानमंत्री ने West Asia और Black Sea region के conflicts के प्रभाव—maritime trade और भारतीय seafarers की सुरक्षा—पर चर्चा की और dialogue तथा diplomacy को समाधान का रास्ता बताया। सितंबर की शुरुआत में Kyiv में विदेश मंत्री ने भी कहा कि केवल रूसी oil खरीद बंद कर देने से युद्ध समाप्त नहीं होगा; शांति के लिए negotiation आवश्यक है।

अगला प्रश्न और कठिन है: क्या भारत चीन के साथ सहयोग बढ़ाते हुए अपनी supply-chain निर्भरता भी घटा सकता है?

चीन, West Asia और युद्ध की भाषा: सहमति कहाँ तक?



भारत-चीन संवाद: सीमा, व्यापार असंतुलन और supply-chain concerns साथ-साथ

China: सहयोग भी, निर्भरता का प्रश्न भी

BRICS में भारत की सबसे जटिल relationship चीन के साथ है। 12 सितंबर की bilateral meeting में दोनों पक्षों ने border areas में peace and tranquillity को संबंधों के विकास का आवश्यक आधार माना। साथ ही structural trade imbalance, supply-chain issues और predictable market access जैसे आर्थिक मुद्दे भी स्पष्ट रूप से उठे।

भारत चीन से manufacturing inputs और कई critical components लेता है, लेकिन किसी एक देश के हाथ में ऐसी supply-chain leverage भी नहीं चाहता जो संकट के समय production रोक दे। New Delhi Declaration के para 67 ने critical minerals की reliable, diversified और resilient supply chains, resource-rich देशों के sovereign rights और value addition पर जोर दिया।

इसलिए भारत की दिशा “China या no China” से अधिक “China plus alternatives” जैसी दिखती है—सहयोग जहाँ संभव हो, पर strategic dependence को धीरे-धीरे कम करना।

Israel पर भारत ने क्या कहा?

New Delhi Declaration भारत का एकतरफा बयान नहीं, BRICS का consensus document है। इसलिए “भारत ने Israel की निंदा की” कहना अधूरा होगा। फिर भी भारत ने उसे सामूहिक भाषा में स्वीकार किया, और वह Gaza-Palestine पर काफी स्पष्ट है।

Gaza-Palestine: सामूहिक भाषा काफी स्पष्ट

Declaration ने humanitarian aid, civilians की सुरक्षा, forced displacement के विरोध, Palestinian self-determination और two-state solution का समर्थन दोहराया। उसने Palestine की पूर्ण UN membership का भी समर्थन किया और 1967 borders पर आधारित independent Palestinian state की established formulation स्वीकार की। Lebanon में Israeli forces की उपस्थिति पर वापसी की मांग भी दर्ज हुई।

यह भारत की स्वतंत्र Israel policy को समाप्त नहीं करता। भारत Israel के साथ strategic relations बनाए रखता है और साथ ही Palestinian statehood तथा negotiated two-state solution का समर्थन करता है। यानी भारत की West Asia policy को “एक पक्ष चुनना” कम और competing interests को manage करना अधिक सही होगा।

घोषणा ने भुखमरी को युद्ध के साधन के रूप में इस्तेमाल करने, नागरिकों व स्वास्थ्य ढाँचे पर हमलों तथा मानवीय सहायता रोकने की भी निंदा की।

Iran-UAE मतभेद और “maximum restraint”

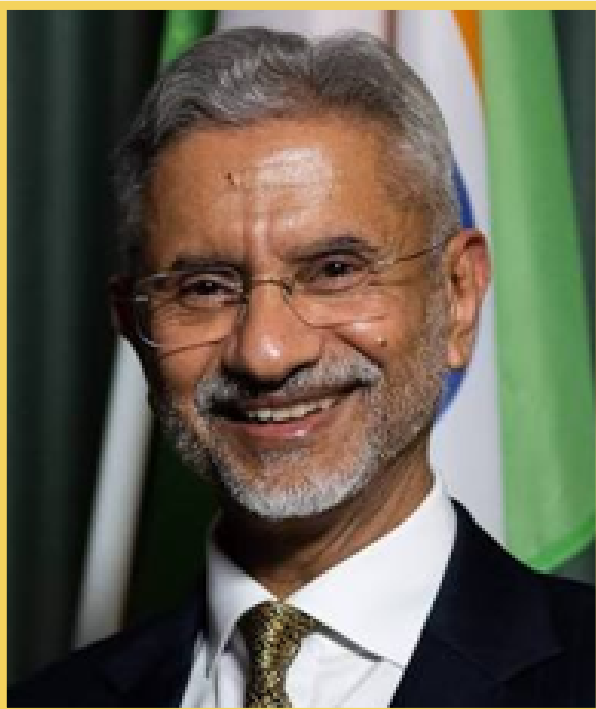
West Asia पर consensus आसान नहीं था। Iran BRICS member है; UAE भी उसी table पर है, लेकिन regional alignments अलग हैं। मई 2026 में BRICS foreign ministers common statement तक नहीं ला पाए थे। सितंबर summit में declaration ने “maximum restraint”, sovereignty, civilian protection और dialogue-diplomacy की भाषा अपनाई। Reuters के अनुसार यही negotiated wording consensus की कुंजी बनी।

भारत के लिए इसका अर्थ सीधे आर्थिक है। Hormuz और Gulf की अस्थिरता तेल, LNG, shipping cost, insurance premium और भारतीय प्रवासी समुदाय पर असर डाल सकती है। इसलिए West Asia में शांति भारत के लिए केवल नैतिक स्थिति नहीं—energy और economic security भी है।

आतंकवाद पर सहमति, लेकिन नाम नहीं

Pahalgam terror attack की निंदा और terrorism पर zero tolerance महत्वपूर्ण है, लेकिन declaration Pakistan का नाम नहीं लेती। यह संतुलित भाषा जरूरी है—BRICS भारत को मंच और language देता है, पर वह अपने-अपने geopolitical समीकरणों का स्थान नहीं ले सकता।

Global South से Bastar तक: BRICS का भारत और छत्तीसगढ़ के लिए अर्थ



“India is destined to rise in a very turbulent world.”

15 सितंबर 2026 के ICWA संबोधन में विदेश मंत्री ने strategic autonomy, multipolarity, tariff volatility, technology rivalry और supply-chain vulnerabilities को भारतीय कूटनीति के दीर्घकालीन प्रश्नों से जोड़ा।

BRICS की असली परीक्षा: घोषणा से क्रियान्वयन तक

नई दिल्ली की 140-बिंदु declaration महत्वाकांक्षी है, पर असली कसौटी implementation है। क्या local-currency payments बड़े scale पर चलेंगे? क्या NDB local-currency finance बढ़ाएगा? क्या critical-mineral supply chains सच में diversified होंगी? क्या India-China trade imbalance कम होगा? इन प्रश्नों के उत्तर अभी भविष्य में हैं।

India-centric दृष्टि से BRICS का मूल्य फिर भी स्पष्ट है: यह भारत को ऐसी strategic space देता है जहाँ वह अमेरिका और यूरोप के साथ partnerships बनाए रखते हुए Russia, China, Gulf और Global South के साथ भी अपने हित साध सके। लक्ष्य dependencies खत्म करना नहीं, उन्हें diversify करना है।

UNSC, सुधार और Global South

Declaration में China और Russia ने India और Brazil की UN, including Security Council, में “greater role” की aspiration का समर्थन दोहराया। इसे permanent seat की स्पष्ट स्वीकृति कहना सही नहीं होगा।

छत्तीसगढ़: नाम नहीं, पर असर के कई रास्ते

New Delhi Declaration में Chhattisgarh या Naxalism का सीधा उल्लेख नहीं है। फिर भी उसके कई themes राज्य से जुड़े हैं।

पहला, critical minerals। अगस्त 2026 में केंद्र ने Chhattisgarh के पाँच critical और strategic mineral blocks को auction tranche में शामिल किया। BRICS resource-rich क्षेत्रों में value addition और diversified supply chains पर जोर देता है। इससे processing, advanced materials और downstream manufacturing के अवसर बन सकते हैं।

दूसरा, mining-steel economy। Chhattisgarh FY26 में भारत के mineral production value का लगभग 13.4% हिस्सा देता है। भिलाई-रायपुर का steel और engineering ecosystem global trade rules, carbon-related barriers और resilient supply chains से सीधे प्रभावित हो सकता है।

तीसरा, Bastar का post-conflict development। केंद्र सरकार ने 2026 में Bastar और देश को Naxal-free घोषित करने का दावा किया है। BRICS declaration इसका उल्लेख नहीं करती; फिर भी skills, MSME, digital connectivity, agriculture और local value chains जैसे विषय अगले विकास-चरण से जुड़ सकते हैं। सुरक्षा उपलब्धि तभी टिकाऊ होगी जब शिक्षा, रोजगार और स्थानीय उद्यमिता साथ बढ़ें।

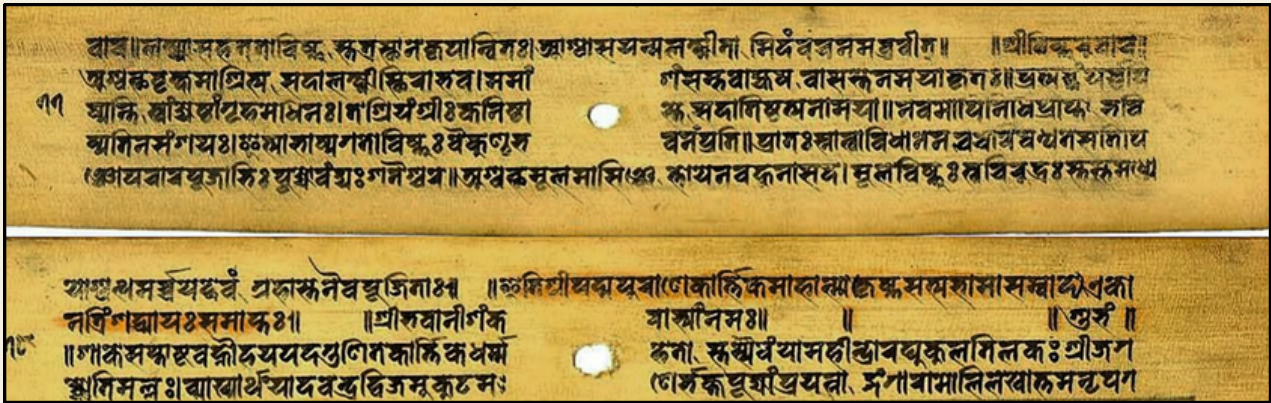
चौथा, agriculture और forest livelihoods। BRICS AGRIN, regenerative agriculture और digital agriculture networks छोटे किसानों, seed systems, climate resilience और traditional knowledge पर सहयोग खोलते हैं। Chhattisgarh जैसे धान और forest-produce आधारित राज्य के लिए उपयोगिता तभी होगी जब national programmes इन्हें स्थानीय producers तक पहुँचाएँ।

BRICS 2026 का असली भारत-केंद्रित प्रश्न यही है—क्या भारत बदलते वैश्विक दबावों के बीच अपने हितों के आधार पर स्वयं निर्णय लेने की क्षमता बढ़ा रहा है?

स्रोत आधार: BRICS New Delhi Declaration 2026, PMO/PIB, Reuters, MEA.

ताड़पत्रों में छुपा भविष्य

जब AI खोल रहा है सदियों पुराने रहस्य



ताड़पत्र पर संस्कृत पांडुलिपि—सदियों पुरानी भारतीय पांडुलिपि परंपरा का प्रतिनिधि दृश्य।

कल्पना नहीं, यह एक वास्तविक विरासत है। सदियों पहले ताड़पत्र पर उकेरे गए अक्षर आज डिजिटल स्क्रीन पर देखे जा सकते हैं। कभी किसी मठ, मंदिर, परिवार या पुस्तकालय तक सीमित पांडुलिपि अब उच्च-गुणवत्ता स्कैन के रूप में दुनिया भर के शोधकर्ताओं तक पहुँच सकती है।

और कहानी अब केवल डिजिटाइजेशन तक सीमित नहीं है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता लिपि पहचानने, अक्षरों को डिजिटल पाठ में बदलने, लिप्यंतरण और अनुवाद में सहायता करने तथा विशाल संग्रहों में अर्थ के आधार पर जानकारी खोजने की दिशा में आगे बढ़ रही है। यानी ताड़पत्र से पिक्सल तक पहुँची यात्रा अब पिक्सल से ज्ञान की यात्रा बन रही है।

डिजिटल होना और पढ़ लिया जाना—दो अलग उपलब्धियाँ हैं; AI इनके बीच की दूरी कम करने की कोशिश कर रहा है। सबसे पुरानी कौन-सी? उत्तर इतना सरल नहीं

“भारत की सबसे पुरानी पांडुलिपि कौन-सी है?”

इस प्रश्न का एक ही उत्तर देना कठिन है। कारण यह है कि पांडुलिपियाँ अलग सामग्री, अलग क्षेत्रों और अलग काल में लिखी गईं। पाँचवीं-छठी शताब्दी के Gilgit Manuscripts मुख्यतः भोजपत्र पर लिखे गए थे और आज National Archives of India में उनका महत्वपूर्ण भाग सुरक्षित है। लेकिन ये ताड़पत्र नहीं, भोजपत्र हैं। ताड़पत्र की बात करें तो नेपाल के National Archives में सुरक्षित Skandapurāṇa की एक पांडुलिपि 810/811 ईस्वी की है। इसके कुछ समय बाद की 828 ईस्वी की Pārameśvaratantra आज Cambridge University Library में सुरक्षित है और इसका digitised रूप ऑनलाइन देखा जा सकता है।

समय की तीन खिड़कियाँ

- 5वीं-6वीं सदी — Gilgit Manuscripts (भोजपत्र)
- 810/811 ई. — Skandapurāṇa (ताड़पत्र)
- 828 ई. — Pārameśvaratantra (ताड़पत्र)

इसलिए “सबसे पुरानी पांडुलिपि” कहते समय यह स्पष्ट करना जरूरी है कि हम भोजपत्र, ताड़पत्र, dated manuscript या surviving collection में से किसकी बात कर रहे हैं

भारत के पास केवल धर्मग्रंथ नहीं, एक ज्ञान-संसार है

भारतीय पांडुलिपि परंपरा को केवल वेद, पुराण और धार्मिक साहित्य तक सीमित समझना भूल होगी। उपलब्ध संग्रहों में दर्शन और साहित्य के साथ आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष-खगोल, योग, व्याकरण, वास्तु, संगीत, प्रशासन और अन्य अनेक विषयों की सामग्री मिलती है। यह विरासत केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि हजारों वर्षों के बौद्धिक विकास के प्राथमिक स्रोतों का विशाल संसार है।

नेपाल में इतनी पुरानी पांडुलिपियाँ कैसे बचीं?

नेपाल manuscript studies में विशेष स्थान रखता है। मंदिरों, मठों, राजकीय और निजी संग्रहों में पुरानी पांडुलिपियाँ लंबे समय तक सुरक्षित रहीं। बाद में Nepal-German Manuscript Preservation Project जैसे अभियानों ने microfilming और cataloguing के जरिए इस सामग्री को आधुनिक शोध के लिए अधिक सुलभ बनाया।



पुरानी ताड़पत्र पांडुलिपि का बंधा हुआ रूप
जैविक सामग्री होने के कारण नियमित संरक्षण आवश्यक है

भारत में कहाँ सुरक्षित है यह ज्ञान?

नई दिल्ली का National Archives of India Gilgit Manuscripts के महत्वपूर्ण हिस्सों को सुरक्षित रखता है। Mysuru का Oriental Research Institute हजारों palm-leaf और paper manuscripts का प्रमुख केंद्र है। Thanjavur की Sarasvati Mahal Library और Odisha State Museum भी भारत की समृद्ध पांडुलिपि परंपरा के बड़े भंडार हैं। इन संग्रहों में संस्कृत, तमिल, तेलुगु, मराठी सहित अनेक भाषाओं और आयुर्वेद, ज्योतिष, साहित्य, संगीत, गणित तथा शिल्प जैसे अनेक विषयों की सामग्री मिलती है। इससे स्पष्ट है कि manuscript heritage किसी एक भाषा, धर्म या भौगोलिक क्षेत्र की संपत्ति नहीं है।

ताड़ का पत्ता पुस्तक कैसे बनता था?

एक सामान्य ताड़-पत्ती को लिखने योग्य सतह बनाना स्वयं एक तकनीकी प्रक्रिया थी। अलग-अलग क्षेत्रों में पत्तियों के चयन, उन्हें संसाधित करने, सुखाने, काटने और सतह को चिकना करने की विधियाँ अलग थीं। कई परंपराओं में धातु की नुकीली लेखनी से अक्षर उकेरे जाते और बाद में गहरे रंग का पदार्थ उन खांचों में भर दिया जाता था ताकि लिखावट स्पष्ट दिखाई दे।

एक साधारण पत्ती को ज्ञान का माध्यम बनाने के पीछे भी विकसित तकनीकी परंपरा थी।

जब एक पांडुलिपि ने इतिहास की समझ बदल दी

पांडुलिपियों के महत्व का प्रसिद्ध उदाहरण कौटिल्य का अर्थशास्त्र है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में आर. शमाशास्त्री ने Mysore Government Oriental Library के संग्रह में इसकी पांडुलिपि पहचानी। 1909 में संस्कृत पाठ के प्रकाशन और बाद के अनुवादों ने प्राचीन भारत की शासन-व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, प्रशासन और statecraft पर आधुनिक अध्ययन को एक महत्वपूर्ण स्रोत दिया।

असली खतरा केवल समय नहीं है

ताड़पत्र जैविक सामग्री है। नमी, फंगस, कीट, तापमान में बदलाव, अनुचित प्रकाश और गलत handling धीरे-धीरे उसे नुकसान पहुँचा सकते हैं। लेकिन केवल physical damage ही संकट नहीं है। यदि पुरानी लिपि पढ़ने वाले विशेषज्ञ न रहें, संदर्भ खो जाए या catalogue में पांडुलिपि की पहचान ही न हो सके, तो सुरक्षित दिखने वाली सामग्री भी ज्ञान की दृष्टि से लगभग मौन हो सकती है।

इसलिए संरक्षण तीन स्तरों पर आवश्यक है: मूल वस्तु का संरक्षण, सुरक्षित डिजिटल प्रति और उसके ज्ञान का अध्ययन।

स्कैनिंग पांडुलिपि की छवि बचाती है, संरक्षण उसकी देह को —और शोध उसके अर्थ को।

1.19 करोड़—लेकिन संख्या को सही समझना जरूरी है

भारत की manuscript wealth के बारे में अलग-अलग आँकड़े दिखाई देते हैं। इन्हें एक-दूसरे का विकल्प नहीं समझना चाहिए। किसी manuscript की जानकारी survey में दर्ज होना, उसका detailed catalogue बनना, scan होना और फिर उसका पाठ समझ लिया जाना—चार अलग-अलग चरण हैं।

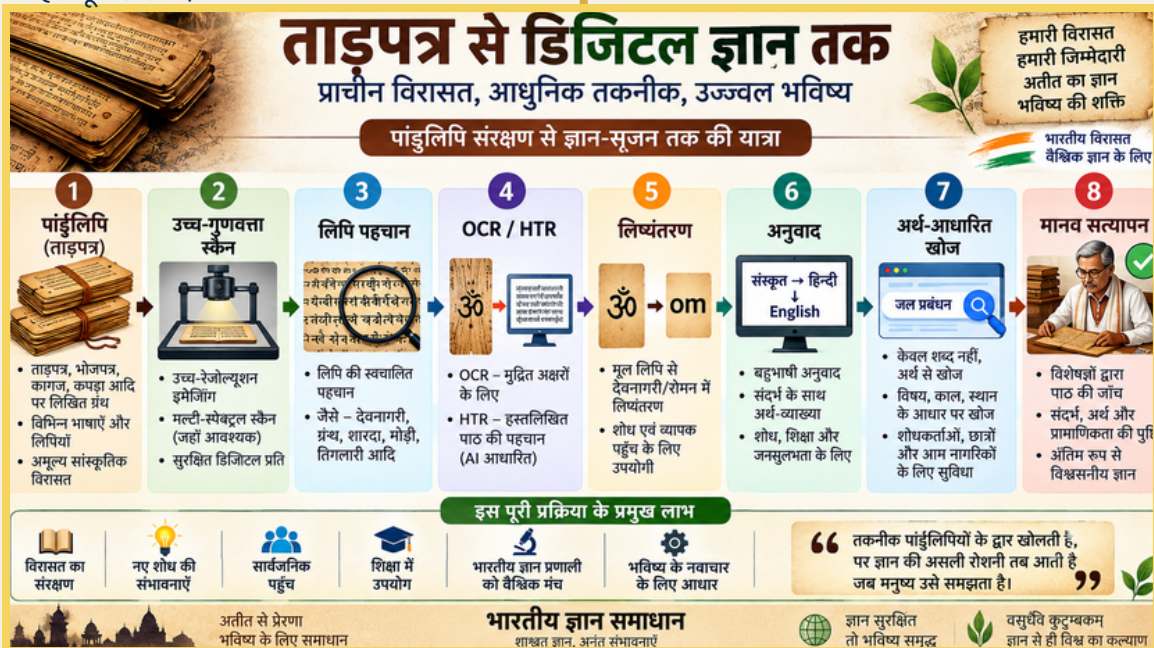
तीन संख्याएँ, तीन अर्थ

44.07 लाख — पुराने Kriti Sampada database के electronic records

1.19 करोड़+ — 2026 National Manuscript Survey में reported manuscripts

4.40 लाख+ — अगस्त 2026 तक public view के लिए उपलब्ध digitised manuscripts

Reported ≠ Catalogued ≠ Digitised ≠ Deciphered



ताड़पत्रों में छुपा भविष्य

ज्ञान भारतम्: केवल स्कैनिंग की परियोजना नहीं

ज्ञान भारतम् मिशन के लिए 2025-2031 की अवधि में लगभग ₹491.66 करोड़ स्वीकृत किए गए हैं। इसके प्रमुख आयामों में survey और cataloguing, conservation, technology और digitisation, linguistics और translation तथा research और outreach शामिल हैं। लक्ष्य केवल पुराने documents की तस्वीरें बनाना नहीं, बल्कि उन्हें पहचानना, सुरक्षित रखना, catalogue करना, पढ़ने योग्य बनाना और शोध के लिए उपलब्ध कराना है।

OCR और HTR—अंतर क्या है?

OCR मुद्रित या स्पष्ट अक्षरों को digital text में बदलने में उपयोगी है। पुरानी handwritten manuscripts अधिक कठिन होती हैं—लिखावट बदलती है, अक्षर फीके हो सकते हैं, HTR verified examples से ऐसे handwritten patterns पहचानने की कोशिश करता है; script recognition, transliteration और semantic search आगे की समझ आसान करते हैं।

अब पांडुलिपि से “बात” भी?

Gyan Mitram, BharatiyaGPT और Pandulipi Darpan जैसे AI-enabled tools manuscript image, transcription और translation को जोड़ने की दिशा में विकसित किए जा रहे हैं। इससे बड़े corpus में किसी विषय, औषधि, जल-प्रबंधन या गणितीय अवधारणा के उल्लेख खोजने की शुरुआती प्रक्रिया बहुत तेज हो सकती है।

AI अक्षर पढ़ सकता है; प्रमाणित अर्थ अभी भी विशेषज्ञ ही तय करेगा।

क्या हम इन्हें घर बैठे देख सकते हैं?

हाँ। यही डिजिटल परिवर्तन का सबसे प्रत्यक्ष लाभ है। Gyan Bharatam portal पर बड़ी संख्या में digitised manuscripts को public view के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है। Cambridge Digital Library में 828 ईस्वी की Pārameśvaratantra के digitised folios देखे जा सकते हैं। National Archives of India की Abhilekh Patal service और Odisha State Museum के online catalogue भी खोज के उपयोगी द्वार हैं।

AI को विद्वान समझ लेना सबसे बड़ी भूल होगी

किसी manuscript में किसी औषधि का उल्लेख मिलना ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन उससे उसकी आधुनिक clinical efficacy स्वतः सिद्ध नहीं होती। इसी प्रकार किसी प्राचीन कृषि, खगोल या धातु-विज्ञान ग्रंथ में कोई विधि मिलना शोध का मूल्यवान संकेत हो सकता है; आधुनिक

उपयोग से पहले उसका वैज्ञानिक परीक्षण आवश्यक होगा।

AI पांडुलिपियों को सत्य में नहीं बदलता; वह उन्हें दोबारा पढ़े, खोजे और परखे जाने योग्य बनाता है।

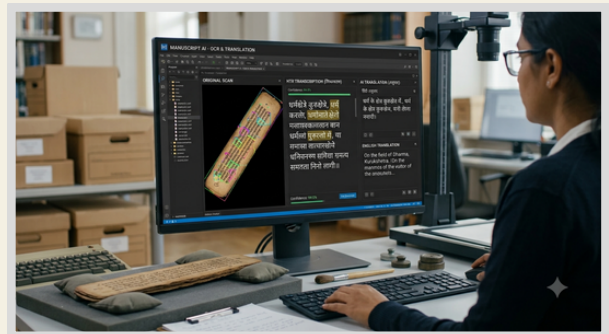
छत्तीसगढ़ के लिए अवसर

छत्तीसगढ़ के संदर्भ में किसी विशाल अज्ञात manuscript treasure का दावा करना अभी उचित नहीं होगा। लेकिन राज्य के पुराने परिवारों, मंदिरों, मठों, आश्रमों, पूर्व रियासतों, संस्कृत पाठशालाओं और शैक्षणिक संस्थानों में यदि हस्तलिखित ग्रंथ मौजूद हैं, तो उनकी पहचान, प्राथमिक cataloguing और conservation assessment महत्वपूर्ण हो सकती है। विश्वविद्यालयों के लिए भी नया अवसर है। संस्कृत, इतिहास और भाषाविज्ञान के साथ computer science और AI को जोड़कर Digital Humanities के interdisciplinary research विकसित किए जा सकते हैं। भविष्य का manuscript scholar अकेला संस्कृतज्ञ या अकेला programmer नहीं होगा—कई क्षेत्रों की विशेषज्ञता को साथ आना होगा।

भविष्य पांडुलिपि में तैयार लिखा हुआ नहीं है

“ताड़पत्रों में भविष्य छुपा है”—इसका अर्थ यह नहीं कि हमारे पूर्वज आज की हर समस्या का तैयार उत्तर पहले ही लिख गए थे। इसका अर्थ कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। लाखों primary sources अभी पूरी तरह पढ़े, तुलना किए और आधुनिक research में शामिल नहीं हुए हैं। कहीं इतिहास का नया तथ्य मिल सकता है, कहीं किसी भाषा का भूला हुआ रूप, कहीं कृषि या चिकित्सा की किसी पारंपरिक पद्धति का उल्लेख जिसे आधुनिक विज्ञान जाँच सके, और कहीं गणित या खगोल के किसी विचार की development chronology अधिक स्पष्ट हो सकती है।

AI इस विशाल संसार का दरवाजा तेजी से खोल सकता है। लेकिन दरवाजे के उस पार जो मिलेगा, उसका अर्थ निकालने का काम अभी भी मनुष्य का है। सदियों पहले किसी अज्ञात लेखक ने ताड़ के पत्ते पर अक्षर उकेरते समय शायद कभी नहीं सोचा होगा कि एक दिन वही अक्षर computer screen पर दिखाई देंगे और मशीन उन्हें पढ़ने का प्रयास करेगी। इस पूरी यात्रा का सबसे बड़ा चमत्कार AI नहीं है—वह है ज्ञान को समय की सीमाओं से बाहर ले जाने की मनुष्य की निरंतर इच्छा।



38 से 45 वर्ष: सरकारी सेवा में अवसरों की नई खिड़की

छत्तीसगढ़ सरकार के फैसले से सेवारत कर्मचारियों, संविदाकर्मियों और नगर सैनिकों को सात अतिरिक्त वर्षों का अवसर; लेकिन इसका वास्तविक अर्थ और सीमा समझना भी उतना ही जरूरी है।

सरकारी सेवा में कई बार योग्यता, अनुभव और मेहनत होने के बावजूद एक संख्या आगे बढ़ने का रास्ता रोक देती है—उम्र। कोई व्यक्ति वर्षों से संविदा पर काम कर रहा हो, किसी निगम-मंडल या स्वशासी संस्था में सेवा दे रहा हो, अथवा सरकारी व्यवस्था में रहते हुए किसी बेहतर पद की तैयारी कर रहा हो, तो समय बीतने के साथ नई भर्ती में शामिल होने के विकल्प सीमित होने लगते हैं।

छत्तीसगढ़ मंत्रिपरिषद् ने 9 सितंबर 2026 को इसी स्थिति से जुड़ा एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। राज्य शासन के अधीन कार्यरत स्थायी और अस्थायी शासकीय सेवकों, निगम-मंडल एवं स्वशासी संस्थाओं के कर्मचारियों, संविदाकर्मियों तथा नगर सैनिकों को अन्य शासकीय सेवाओं और उच्च पदों के लिए आवेदन करने की निर्धारित अधिकतम आयु सीमा 38 वर्ष से बढ़ाकर 45 वर्ष करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। इस संबंध में आगे एकीकृत स्थायी दिशा-निर्देश जारी किए जाने हैं।

पहली नजर में यह केवल सात वर्ष की वृद्धि लग सकती है, लेकिन जिन कर्मचारियों ने सेवा करते हुए अनुभव और योग्यता तो बढ़ाई, पर उम्र पुरानी सीमा के करीब पहुँच गई, उनके लिए यह बेहतर पद की प्रतिस्पर्धा में बने रहने का अतिरिक्त समय है। साथ ही एक बात शुरू में ही स्पष्ट रहनी चाहिए—यह फैसला राज्य के प्रत्येक सामान्य अभ्यर्थी के लिए हर सरकारी नौकरी की अधिकतम आयु स्वतः 45 वर्ष कर देने का निर्णय नहीं है।

फैसला किसके लिए है?

कैबिनेट के निर्णय में लाभार्थी श्रेणियां स्पष्ट हैं—स्थायी एवं अस्थायी शासकीय सेवक, राज्य के निगम-मंडल और स्वशासी संस्थाओं के कर्मचारी, संविदाकर्मी तथा नगर सैनिक। इनके लिए दूसरी शासकीय सेवाओं और उच्च पदों पर आवेदन करने की निर्धारित अधिकतम आयु सीमा 38 से बढ़ाकर 45 वर्ष करने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है। किसी भी भर्ती में वास्तविक पात्रता फिर भी उस पद के भर्ती नियम, अभ्यर्थी की श्रेणी और संबंधित विभाग के अधिकृत विज्ञापन से तय होगी।



रोजगार मेले का दृश्य: सरकारी रोजगार में अवसर केवल रिक्तियों से नहीं, पात्रता की शर्तों से भी तय होते हैं।

निर्णय	पुरानी सीमा	नई सीमा	अंतर
9 सितंबर 2026	38 वर्ष	45 वर्ष	+7 वर्ष



“नीति-निर्णय का संदर्भ: 9 सितंबर 2026 की मंत्रिपरिषद बैठक में आयु सीमा संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी मिली।”

“सात अतिरिक्त वर्ष केवल उम्र की छूट नहीं; कई कर्मचारियों के लिए अनुभव को नए अवसर में बदलने की अवधि हो सकते हैं।”

45 वर्ष का अंक पहले भी था—फिर नया क्या है?

यह प्रश्न स्वाभाविक है, क्योंकि छत्तीसगढ़ की भर्ती व्यवस्था में “45 वर्ष” का अंक अलग-अलग संदर्भों में पहले से दिखाई देता रहा है। सरकारी भर्ती प्रकाशनों में कुछ विशेष श्रेणियों को मिलने वाली आयु-छूटों के बाद अधिकतम सीमा 45 वर्ष से अधिक न होने का प्रावधान मिलता है। वहीं राज्य निगम-मंडल कर्मचारियों, नगर सैनिकों और संविदा सेवा से जुड़े प्रावधानों में 38 वर्ष की सीमा भी दर्ज रही है।

इसलिए सितंबर 2026 के निर्णय का वास्तविक महत्व “45” संख्या पहली बार सामने आने में नहीं है। महत्व इस बात में है कि पहले से कार्यरत निर्दिष्ट श्रेणियों के लिए दूसरी शासकीय सेवा या उच्च पद में आवेदन का रास्ता 38 वर्ष से आगे बढ़ाकर 45 वर्ष तक खोलने का निर्णय लिया गया है। यही अंतर इस नीति को सही ढंग से समझने की कुंजी है।

सात अतिरिक्त वर्ष क्यों महत्वपूर्ण हो सकते हैं?

हर व्यक्ति का करियर एक जैसी गति से आगे नहीं बढ़ता। किसी को कम उम्र में स्थायी नौकरी मिल सकती है, जबकि कोई दूसरा कई वर्षों तक संविदा, परियोजना आधारित सेवा या किसी स्वशासी संस्था में काम करता रहता है। इस दौरान वह अनुभव अर्जित करता है, अपनी दक्षता बढ़ाता है और अधिक जिम्मेदारी वाले पद के योग्य बनता है—लेकिन उसकी उम्र भी बढ़ती रहती है।

मान लीजिए किसी व्यक्ति ने लगभग 29 वर्ष की उम्र में संविदा सेवा शुरू की। आठ-दस वर्ष काम करने के बाद उसके पास पर्याप्त अनुभव और किसी बेहतर पद के लिए आवश्यक योग्यता है, लेकिन उसी समय उसकी आयु 38 वर्ष के आसपास पहुँच चुकी हो सकती है। 45 वर्ष तक आवेदन का अवसर ऐसे व्यक्ति को अपने अनुभव और योग्यता के आधार पर कुछ और वर्षों तक बेहतर सरकारी पद के लिए प्रतिस्पर्धा करने की संभावना देता है।

संविदाकर्मियों के लिए इसका महत्व अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। वर्षों तक सरकारी या संबद्ध संस्थाओं में काम करने से अनुभव तो मिलता है, लेकिन सेवा स्वतः नियमित नियुक्ति में नहीं बदलती। बेहतर पद के लिए उन्हें संबंधित भर्ती की पात्रता और चयन प्रक्रिया से गुजरना ही पड़ता है। ऐसे में आयु सीमा बढ़ना नियमितीकरण नहीं, बल्कि प्रतिस्पर्धा में बने रहने का अतिरिक्त अवसर है।

अनुभव को अवसर मिलेगा, चयन फिर भी योग्यता से होगा

सरकारी व्यवस्था में वर्षों तक काम करने वाले कर्मचारी के पास कार्यालयीन प्रक्रिया, योजनाओं के क्रियान्वयन, जनता से संवाद और फील्ड की परिस्थितियों की व्यावहारिक समझ हो सकती है। फिर भी 45 वर्ष तक आवेदन की पात्रता मिलने का अर्थ स्वतः चयन या पदोन्नति नहीं है। शैक्षणिक योग्यता, परीक्षा, मेरिट, आरक्षण, अनुभव संबंधी शर्तें और संबंधित भर्ती नियम पहले की तरह लागू रहेंगे। इसलिए इस निर्णय को career mobility—यानी वर्तमान सेवा से बेहतर अवसर के लिए प्रतिस्पर्धा करने की अवधि बढ़ाने वाला कदम—कहना अधिक उचित है।

अवसर है, नौकरी की गारंटी नहीं

आयु सीमा बढ़ने से किसी भर्ती के लिए पात्र उम्मीदवारों का दायरा बढ़ सकता है, लेकिन इससे अपने-आप नए सरकारी पद पैदा नहीं होते। वास्तविक रोजगार तभी बनेगा जब विभागों में रिक्तियां हों, भर्ती विज्ञापन जारी हों और चयन प्रक्रिया समय पर पूरी हो। यदि कोई पहले से कार्यरत कर्मचारी दूसरी शासकीय सेवा में जाता है, तो यह उसके लिए करियर प्रगति है; इसे सीधे नई अतिरिक्त नौकरी का सृजन नहीं कहा जा सकता। संविदाकर्मियों का नियमित पद पर चयन उसके व्यक्तिगत करियर में बड़ा बदलाव जरूर ला सकता है।

38 → 45 | +7 वर्ष का अतिरिक्त आवेदन अवसर



किसके लिए?

- स्थायी/अस्थायी शासकीय सेवक
- निगम-मंडल/स्वशासी संस्था कर्मचारी
- संविदाकर्मि
- नगर सैनिक



किस उद्देश्य से?

- अन्य शासकीय सेवाओं में आवेदन
- उच्च पदों के लिए आवेदन



क्या नहीं है?

- सभी सामान्य अभ्यर्थियों के लिए स्वतः 45 वर्ष नहीं
- नौकरी की गारंटी नहीं
- चयन भर्ती नियम व योग्यता पर निर्भर



पात्रता

अपनी श्रेणी की पात्रता जांचें



आवेदन

निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार



परीक्षा / चयन

योग्यता व भर्ती नियम के आधार पर



अवसर बढ़ा है, पर चयन अब भी योग्यता, नियम और परीक्षा से होगा।

युवा अभ्यर्थियों का सवाल भी महत्वपूर्ण है

पात्रता का दायरा बढ़ने पर कुछ भर्तियों में प्रतियोगिता भी बढ़ सकती है। युवा अभ्यर्थियों के मन में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि अधिक आयु और अधिक अनुभव वाले कर्मचारी भी जब उसी भर्ती में शामिल होंगे तो उनके अवसरों पर क्या असर पड़ेगा। इस चिंता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, लेकिन इसका टिकाऊ समाधान केवल आयु सीमा को संकीर्ण रखने में नहीं, बल्कि नियमित और समयबद्ध भर्ती में है। यदि रिक्तियां वर्षों तक नहीं निकलतीं तो युवा अभ्यर्थी भी उम्र बढ़ने की चिंता से जूझता है और पहले से सेवा दे रहा कर्मचारी भी बेहतर अवसर से वंचित होता है।

असल सवाल यह भी है कि सरकारी भर्ती व्यवस्था अलग-अलग पीढ़ियों के अभ्यर्थियों के बीच अवसर का संतुलन कैसे बनाए। नए अभ्यर्थियों के पास ताजा शैक्षणिक तैयारी और लंबा कार्यकाल आगे होता है, जबकि सेवारत कर्मचारियों के पास व्यावहारिक अनुभव होता है। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा वही होगी जिसमें दोनों को समान नियमों के तहत अपनी योग्यता साबित करने का मौका मिले और भर्ती की अनिश्चितता किसी एक वर्ग के लिए अतिरिक्त बाधा न बने।

अब सबसे महत्वपूर्ण हैं स्थायी दिशा-निर्देश

कैबिनेट निर्णय के अनुसार राज्य शासन इस संबंध में एकीकृत स्थायी दिशा-निर्देश जारी करेगा। यही दस्तावेज स्पष्ट करेगा कि नई सीमा किन सेवाओं और पदों पर किस तरह लागू होगी, पात्रता कैसे प्रमाणित होगी और विभागीय भर्ती नियमों से इसका समन्वय कैसे किया जाएगा। इसलिए किसी कर्मचारी या अभ्यर्थी को केवल समाचार शीर्षक के आधार पर अपनी पात्रता तय नहीं करनी चाहिए; अंतिम आधार संबंधित भर्ती का अधिकृत विज्ञापन और लागू शासन निर्देश होंगे।

अवसर की असली परीक्षा अब शुरू होगी

38 से 45 वर्ष की सीमा उन पात्र कर्मचारियों के लिए महत्वपूर्ण राहत बन सकती है जिनके पास अनुभव और योग्यता तो है, लेकिन उम्र आगे बढ़ने की बाधा बन रही थी। फिर भी नीति का वास्तविक मूल्य उसके क्रियान्वयन से तय होगा। स्पष्ट नियम, नियमित रिक्तियां और समय पर भर्ती ही सात अतिरिक्त वर्षों को वास्तविक अवसर में बदलेंगे। यदि भर्ती ही लंबे समय तक न हो, तो बढ़ी हुई आयु सीमा केवल समय देगी, अवसर नहीं। किसी कर्मचारी के लिए सात वर्ष तभी मायने रखेंगे जब उन सात वर्षों के भीतर वास्तविक भर्ती के दरवाजे भी खुलें। इसलिए इस निर्णय को केवल आयु-छूट की खबर मानने के बजाय भर्ती व्यवस्था की गति और पारदर्शिता के साथ जोड़कर देखना होगा। बेहतर रोजगार व्यवस्था वही होगी जिसमें युवा प्रतिभा को समय पर प्रवेश मिले और अनुभवी योग्य कर्मचारी के लिए आगे बढ़ने का रास्ता केवल उम्र के कारण समय से पहले बंद न हो।

नेपाल की त्रासदी, हिमालय की चेतावनी

आज बाढ़ का डर, कल पानी का संकट—क्या पिघलता हिमालय हमारे भविष्य का नक्शा बदल रहा है?

26 अगस्त 2026 की नेपाल त्रासदी कुछ घंटों में गुजर गई, लेकिन उसने आने वाले दशकों से जुड़े कई प्रश्न छोड़ दिए। बदलते glaciers, असमान वैश्विक carbon footprint और भविष्य के “Peak Water” के बीच यह घटना पूछती है—क्या आज दिखाई दे रही बाढ़ कल के जल-संकट की शुरुआती चेतावनी है?



“क्या यह केवल एक दुर्लभ प्राकृतिक दुर्घटना थी—या बदलते हिमालय की किसी बड़ी कहानी का हिस्सा?”

इस कहानी की शुरुआत 2026 में नहीं हुई

हिमालय भूगर्भीय रूप से युवा और स्वभाव से अस्थिर पर्वत-शृंखला है। भूस्खलन, हिमस्खलन और अचानक आने वाली बाढ़ें industrial carbon emissions से बहुत पहले भी होती थीं। इसलिए 26 अगस्त की घटना को यह कहकर समझा देना कि carbon emission ने ही यह disaster कराया, वैज्ञानिक रूप से उचित नहीं होगा।

पर इसका अर्थ यह भी नहीं कि बदलती जलवायु अप्रासंगिक है। अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि जिस प्राकृतिक व्यवस्था के भीतर ये hazards होते हैं, क्या वही व्यवस्था तेजी से बदल रही है?



Langtang catchment: लगभग 1815 के reconstructed glacier extent और 2023 की स्थिति की तुलना। स्रोत: peer-reviewed Langtang glacier reconstruction study, 2026.

Langtang catchment पर 2026 में प्रकाशित peer-reviewed research इस बदलाव का महत्वपूर्ण प्रमाण देती है। लगभग दो शताब्दियों के समय-फलक पर glacier area में बड़ा contraction दिखाई देता है। अध्ययन की एक खास बात यह है कि glacier bodies की संख्या बढ़ती दिखाई देती है—लेकिन इसका अर्थ अधिक बर्फ नहीं है। बड़े ice masses पीछे हटते हुए छोटे fragments में विभाजित हो सकते हैं।

“गिनती बढ़ सकती है, जबकि हिम-भंडार घट रहा हो।”

Glacier retreat केवल सफेद बर्फ की सीमा पीछे जाने तक सीमित नहीं रहता। उसके साथ नई exposed rock surfaces, moraine, बदलते meltwater channels और पहले ice से ढके slopes सामने आते हैं। हर glacier की प्रतिक्रिया समान नहीं होती, लेकिन व्यापक picture एक ऐसे cryosphere की है जो तेजी से पुनर्गठित हो रही है।

2026 का व्यापक Himalayan picture भी इसी दिशा में है। ICIMOD ने लगातार negative mass-balance years और below-normal snow persistence की ओर ध्यान

खींचा है। इसका अर्थ यह नहीं कि हर glacier एक जैसा व्यवहार करेगा; इसका अर्थ यह है कि Himalayan ice-and-snow system पर दबाव बढ़ रहा है।

यानी 26 अगस्त की घटना भले किसी एक स्थानीय trigger से शुरू हुई हो, लेकिन वह ऐसे Himalaya में घटी जो स्वयं तेजी से बदल रहा है—और यही भविष्य के प्रश्न को गंभीर बनाता है।

यदि carbon को एक कारण मानकर दुनिया की तस्वीर देखें तो?

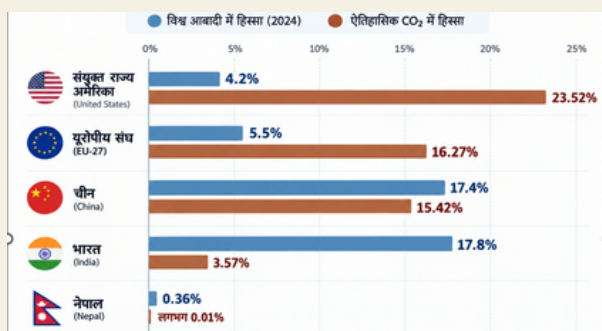
किसी एक glacier collapse की जिम्मेदारी इस तरह नहीं बाँटी जा सकती कि अमुक देश 20 प्रतिशत और दूसरा देश 30 प्रतिशत जिम्मेदार है। Geology, slope stability, snowfall, temperature, infrastructure और preparedness—सबकी भूमिका हो सकती है।

हिमालय की चेतावनी

लेकिन एक अलग और वैध प्रश्न पूछा जा सकता है: यदि मानवजनित warming में carbon emissions की भूमिका को आधार मानकर विश्व-परिदृश्य समझने का प्रयास करें, तो अलग-अलग देशों का योगदान कैसा दिखाई देता है?

आबादी कितनी और कार्बन कितना?

विश्व की आबादी और Cumulative CO₂ उत्सर्जन में हिस्सेदारी



विश्व आबादी बनाम historical cumulative fossil-fuel/industrial CO₂. स्रोत: Global Carbon Budget / Our World in Data; UN World Population Prospects. Land-use change शामिल नहीं।

यह comparison एक जरूरी अंतर सामने लाता है। कुछ औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं की global population में हिस्सेदारी अपेक्षाकृत छोटी है, लेकिन industrial era से जमा carbon में उनका historical contribution बहुत बड़ा है। भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में यह अनुपात अलग दिखाई देता है, जबकि नेपाल दोनों पैमानों पर बहुत छोटा contributor है।

यह graph नेपाल की बाढ़ का “दोषी” तय नहीं करता। यह केवल उस व्यापक atmospheric background को समझने में मदद करता है जिसमें Himalayan warming घटित हो रही है। यहीं climate justice का मूल प्रश्न जन्म लेता है—क्या climate change के कारण और उसके परिणाम एक ही भूगोल में पैदा होते हैं? अक्सर नहीं।

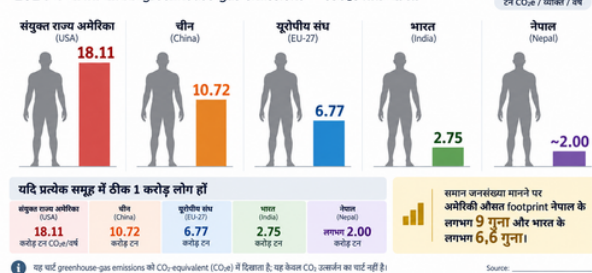
“Carbon data किसी एक आपदा का अपराधी तय नहीं करता; वह केवल यह दिखाता है कि warming की पृष्ठभूमि बनाने में दुनिया का योगदान समान नहीं रहा।”

आबादी बराबर करें तो तस्वीर फिर बदलती है

कुल national emissions भी पूरी कहानी नहीं बताते। एक अरब से अधिक लोगों वाला देश स्वाभाविक रूप से कुछ करोड़ आबादी वाले देश से अधिक total energy consume कर सकता है। इसलिए दूसरा lens है—per-capita emissions।

एक व्यक्ति, कितना कार्बन?

2024 में औसत वार्षिक greenhouse-gas emissions — tCO₂e प्रति व्यक्ति



Per-capita greenhouse-gas footprint: population, energy use और consumption pattern को समझने का अलग perspective। स्रोत: PRIMAP-hist / Our World in Data; unit: tCO₂e प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष।

इसलिए climate responsibility को समझने के लिए तीन अलग questions जरूरी हैं—इतिहास में किसने कितना carbon जोड़ा, आज कौन कितना जोड़ रहा है, और एक औसत नागरिक से जुड़ा footprint कितना है। इन तीनों के उत्तर अलग हो सकते हैं; इसलिए climate debate को केवल total emissions तक सीमित करना अधूरा होगा।

2100 कोई science-fiction तारीख नहीं

आज जन्म लेने वाले बच्चे इस सदी के अंतिम दशकों तक जीवित रह सकते हैं। इसलिए 2100 के glacier scenarios कोई काल्पनिक भविष्य नहीं हैं। Low-warming और high-warming futures के बीच अंतर इस बात में दिख सकता है कि Himalayan water system कितना ice reserve बचा पाता है।

भारत, नेपाल और चीन—सीमाएँ अलग, हिमालय साझा

Himalayan rivers और cryosphere राजनीतिक सीमाओं का पालन नहीं करते। भारत के लिए इसका अर्थ Himalayan states से आगे downstream agriculture, hydropower, ecosystems और plains की water security तक है। इसलिए monitoring और warning information को सीमाओं के पार तेजी से साझा करना भविष्य की सुरक्षा का हिस्सा बनना होगा।

Flash flood कैमरे में दिखाई देती है, टूटा bridge headline बनता है। लेकिन glacier depletion का दूसरा संकट धीरे आएगा—river flow बदलेगा, irrigation और hydropower प्रभावित होंगे और dry-season water अधिक महत्वपूर्ण होगा। बाढ़ कुछ घंटों में डराती है; पानी की कमी समाज को दशकों तक बदल सकती है।

आज तस्वीर में नेपाल है। कल कोई दूसरी Himalayan valley हो सकती है। और कुछ दशकों बाद सबसे भयावह headline शायद बाढ़ की नहीं होगी—

“नदी तो वही है... पानी कहाँ गया?”

संदर्भ: Nepal MoFA (Sep 2026); ICIMOD HKH Glacier Outlook / HI-WISE; peer-reviewed Langtang study (2026); IPCC AR6; Global Carbon Budget / Our World in Data; UN World Population Prospects 2024; Reuters reporting through 14 Sep 2026.

तनाव के बीच विवेक, सफलता के बाद संवेदना

यक्ष-युधिष्ठिर संवाद से शिक्षक और शिक्षार्थी के लिए आत्म-प्रबंधन की सीख

आधुनिक शिक्षा में विद्यार्थी की परीक्षा अंक और रैंक से होती है, लेकिन जीवन उससे एक कठिन प्रश्न पूछता है—क्या दबाव के बीच उसका विवेक और सफलता के बाद उसकी संवेदना सुरक्षित रही? महाभारत का यक्ष-युधिष्ठिर प्रसंग इस प्रश्न का गहरा और व्यावहारिक उत्तर देता है।



सरोवर के किनारे चार भाई निष्प्राण पड़े हैं। पाँचवाँ भाई प्यास से व्याकुल है, पर जल छूने से पहले एक अदृश्य वाणी उसे रोक देती है—पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर दो। आज का विद्यार्थी परीक्षा-कक्ष में लगभग ऐसी ही शर्त के सामने बैठता है: पहले उत्तर, फिर आगे का रास्ता।

जब पढ़ाई निरंतर प्रदर्शन में बदल जाए

विस्तृत पाठ्यक्रम, कोचिंग, लगातार मूल्यांकन, परिवार की अपेक्षाएँ और सीमित अवसर विद्यार्थी पर प्रदर्शन का दबाव डालते हैं। शिक्षक भी पाठ्यक्रम, परिणाम, प्रशासनिक काम और अभिभावकों की अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाते हैं। शिक्षा तब ज्ञान की यात्रा कम और लगातार परीक्षा अधिक लगने लगती है।

NEET 2026 के आँकड़े पात्रता और मनचाही सीट के बीच दूरी दिखाते हैं। वे किसी विद्यार्थी को सफल या असफल घोषित नहीं करते, पर प्रतियोगिता की वास्तविकता सामने रखते हैं।

NEET 2026	करीब 20 लाख अभ्यर्थी
परीक्षा में पात्र	11.21 लाख
MBBS सीटें	1,40,214 INIs को छोड़कर
मुख्य अंतर	पात्रता सीट की गारंटी नहीं

तनाव चिंता और अवसाद एक ही अवस्था नहीं

तनाव वर्तमान मांगों की प्रतिक्रिया है, चिंता भविष्य की आशंका



से जुड़ती है और अवसाद जैविक, मनोवैज्ञानिक व सामाजिक कारणों वाली गंभीर स्थिति हो सकता है। हर तनाव अवसाद नहीं बनता, पर लंबे दबाव, अकेलेपन, नींद की कमी और निराशा से जोखिम बढ़ सकता है। आत्म-प्रबंधन का अर्थ भावनाएँ मिटाना नहीं, उन्हें पहचानकर प्रतिक्रिया और निर्णय संतुलित करना है।

संकट में युधिष्ठिर का पहला कदम

वनपर्व में पांडव वनवास के कठिन दौर में थे। प्यासे नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीम एक सरोवर पर पहुँचे। एक अदृश्य वाणी ने प्रश्नों का उत्तर दिए बिना जल न पीने की चेतावनी दी; चारों ने उसे अनसुना किया और जल पीते ही निष्प्राण होकर गिर पड़े। युधिष्ठिर ने भाइयों को उस दशा में देखा तो वे शोक से विचलित हुए, विलाप किया और अनिष्ट की आशंका भी की। फिर उन्होंने स्वयं को संभाला, घटनास्थल देखा और कारण पर विचार किया।

यक्ष की वाणी सुनकर युधिष्ठिर ने जल्दबाजी में जल नहीं पिया। चुनौती स्वीकार कर वे एक-एक प्रश्न पर केंद्रित हुए। यह भावनाहीनता नहीं, शोक के बीच प्रतिक्रिया पर नियंत्रण वापस पाना था। विद्यार्थी भी पूरे पाठ्यक्रम और भविष्य के बोझ के बजाय अगला सही प्रश्न और आज का प्रयास सामने रख सकता है।

प्रश्नों के बाद हुई चरित्र की परीक्षा

यक्ष उत्तरों से संतुष्ट हुआ और उसने चारों में से एक भाई को जीवित करने का अवसर दिया। यही कथा का निर्णायक मोड़ है। पांडवों को अज्ञातवास पूरा कर राज्य वापस पाने का संघर्ष करना था। भीम का बल और अर्जुन की युद्धकुशलता अधिक उपयोगी लगती थी। यक्ष ने भी पूछा कि उन्हें छोड़कर नकुल को क्यों चुना जा रहा है।

युधिष्ठिर ने कहा कि कुंती का एक पुत्र उनके रूप में जीवित है, इसलिए माद्री का भी एक पुत्र जीवित रहना चाहिए। उन्होंने



नकुल को चुना। यह भावनाहीन गणना नहीं, बल्कि न्याय, समदृष्टि और दोनों माताओं के प्रति समान दायित्व का निर्णय था। पहली परीक्षा ने उनकी बुद्धि जाँची; सफलता मिलने के बाद हुए चुनाव ने चरित्र। उनके धर्मसम्मत निर्णय से प्रसन्न होकर यक्ष ने चारों भाइयों को जीवित कर दिया।

सफलता के बाद भी संवेदना क्यों जरूरी है

आज की शिक्षा सही उत्तर, ऊँची रैंक, प्रतिष्ठित संस्थान और बेहतर नौकरी को मापती है। यह जरूरी है, पर पर्याप्त नहीं। प्रश्न यह भी है कि सफलता के बाद व्यक्ति अपने परिवार, समाज, सेवा और राष्ट्र के प्रति कितना उत्तरदायी रहता है। आत्म-नियंत्रण यदि मनुष्य को कठोर बना दे और लक्ष्य की प्राप्ति उसे दूसरों से काट दे, तो वह आत्म-प्रबंधन नहीं, भावनात्मक दमन है। वास्तविक आत्म-प्रबंधन व्यक्ति को निर्णय लेने योग्य बनाता है, संवेदनहीन नहीं। मनोवैज्ञानिक जेम्स ग्रॉस की 2002 की समीक्षा भी इस अंतर का समर्थन करती है: स्थिति को देखने का ढंग बदलना (पुनर्मूल्यांकन) प्रायः अधिक प्रभावी पाया गया, जबकि भावना को दबाने से बाहरी अभिव्यक्ति घटती है, पर भीतर का अनुभव नहीं घटता, स्मृति कमजोर पड़ती है और शारीरिक प्रतिक्रिया बढ़ सकती है।

सफलता के बाद उत्तरदायित्व का यही प्रश्न प्रतिभा-पलायन की बहस में भी उठता है। IIT जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से शिक्षित युवा यदि विदेश में काम करते हैं तो केवल इस आधार पर उनके राष्ट्रभाव पर प्रश्न नहीं लगाया जा सकता। अवसर, शोध-सुविधाएँ और वैश्विक अनुभव भी प्रवासन के कारण होते हैं। Science (2025) में प्रकाशित एक समीक्षा के अनुसार उच्च-शिक्षित लोगों का प्रवासन मूल देश को धन-प्रेषण, ज्ञान-हस्तांतरण, निवेश और वापसी जैसे रास्तों से लाभ भी पहुँचा सकता है। अधिक सार्थक प्रश्न यह है कि प्रतिभा जहाँ भी रहे, क्या उसका ज्ञान भारतीय समाज से जुड़ा रहता है। शोध-सहयोग, मार्गदर्शन, निवेश, नवाचार और वापस लौटकर सेवा—योगदान के कई मार्ग हैं। शिक्षा को सफलता के साथ यह उत्तरदायित्व भी विकसित करना चाहिए।

चिकित्सा क्षेत्र में भी संतुलन आवश्यक है। डॉक्टर प्रत्येक रोगी की पीड़ा को अपनी निजी पीड़ा बना ले तो निरंतर काम करना कठिन होगा; इसलिए पेशेवर स्थिरता जरूरी है। किंतु यही दूरी संवेदनहीनता में बदल जाए और रोगी केवल एक केस या संख्या रह जाए, तो चिकित्सा का सेवा-भाव कमजोर पड़ता है। 2011 की एक व्यवस्थित समीक्षा (न्यूमैन व अन्य) में अधिकांश अध्ययनों ने चिकित्सा प्रशिक्षण के दौरान सहानुभूति में कमी

पाई और प्रशिक्षण के क्लिनिकल चरण तथा प्रशिक्षण-संस्कृति से उपजे तनाव को इसका मुख्य कारण बताया; हालाँकि इस निष्कर्ष पर शोधकर्ताओं में मतभेद भी हैं। समाधान डॉक्टर को दोष देना नहीं, बल्कि ऐसी शिक्षा और कार्यव्यवस्था बनाना है जिसमें दक्षता और संवेदना दोनों बची रहें।

शिक्षक और संस्था की साझा जिम्मेदारी

युधिष्ठिर की कथा धैर्य सिखाती है, पर व्यवस्था अपनी जिम्मेदारी विद्यार्थी पर नहीं छोड़ सकती। संस्थानों को बोझ कम करना, यथार्थपरक करियर परामर्श देना, वैकल्पिक अवसरों को सम्मान देना और संकट के संकेत पहचानना चाहिए। लगातार उदासी, नींद-भूख में बदलाव, संबंधों से दूरी या आत्महानि के विचार हों तो प्रशिक्षित परामर्शदाता अथवा मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ की सहायता जरूरी है। कथा दिशा दे सकती है; वह चिकित्सकीय सहायता का विकल्प नहीं है।

सहायता कहाँ मिले परीक्षा के तनाव, चिंता या उदासी के समय टेली-मानस (भारत सरकार) की निःशुल्क 24x7 हेल्पलाइन 14416 (या 1800-891-4416) पर हिंदी सहित कई भाषाओं में बात की जा सकती है।

युधिष्ठिर से आत्म प्रबंधन के पाँच सूत्र

- भावना स्वीकारें, पर तत्काल प्रतिक्रिया रोकें।
- पूरी समस्या के बजाय अगले सही प्रश्न पर ध्यान दें।
- परिणाम को अपनी पूरी पहचान न बनने दें।
- निर्णय में लाभ के साथ न्याय और मानवीय मूल्य देखें।
- सफलता को परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व से जोड़ें।

शिक्षा का अंतिम उद्देश्य

यक्ष-प्रश्न यह वादा नहीं करता कि संयम से हर बार मनचाहा परिणाम मिलेगा। तैयारी के बाद भी असफलता संभव है। उसकी सीख है कि अनिश्चित परिणामों के बीच मनुष्य अपनी सोच, गरिमा और अगला निर्णय बचा सकता है। असफलता यदि विद्यार्थी की पहचान तोड़ दे या सफलता उसे संवेदना और समाज से काट दे, तो शिक्षा अधूरी है। उसका लक्ष्य मन को कठोर नहीं, स्थिर, विवेकपूर्ण और उत्तरदायी बनाना है।

वात-पित्त-कफ

शरीर की वह लय, जो समय, ऋतु और आयु के साथ बदलती रहती है

शरीर, दिन, मौसम और जीवन-चक्र को जोड़कर समझने की एक सरल आयुर्वेदिक दृष्टि

लेखक: डॉ. अनुज कुमार नारद

सुबह का शरीर दोपहर जैसा नहीं होता, बचपन का शरीर वृद्धावस्था जैसा नहीं होता और गर्मियों का भोजन सर्दियों जैसा नहीं हो सकता। आयुर्वेद इसी बदलती लय को समझने की कोशिश करता है।

सुबह उठते समय शरीर कुछ और महसूस करता है, दोपहर तक भूख और ऊर्जा का रूप बदल जाता है और रात आते-आते वही शरीर विश्राम चाहता है। उम्र बढ़ती है तो सहनशक्ति, पाचन और नींद का ढंग बदलता है। मौसम बदलता है तो हमारी भूख, त्वचा, प्यास, आलस्य और सक्रियता भी बदल सकती है। आयुर्वेद इन परिवर्तनों को अलग-अलग घटनाएँ नहीं मानता; वह शरीर, समय और प्रकृति को एक ही निरंतर लय के हिस्से के रूप में देखता है।

इस दृष्टि के केंद्र में वात, पित्त और कफ हैं। इन्हें केवल “बीमारी वाले दोष” समझना अधूरा है। संतुलित अवस्था में ये शरीर की गति, रूपांतरण, संरचना और पोषण से जुड़े पारंपरिक सिद्धांत हैं; अपनी स्वाभाविक स्थिति से भटकने पर इन्हीं के असंतुलन को विकृति की दिशा में देखा जाता है। महत्वपूर्ण बात बराबरी नहीं, बल्कि व्यक्ति की अपनी प्रकृति के अनुरूप संतुलन है।

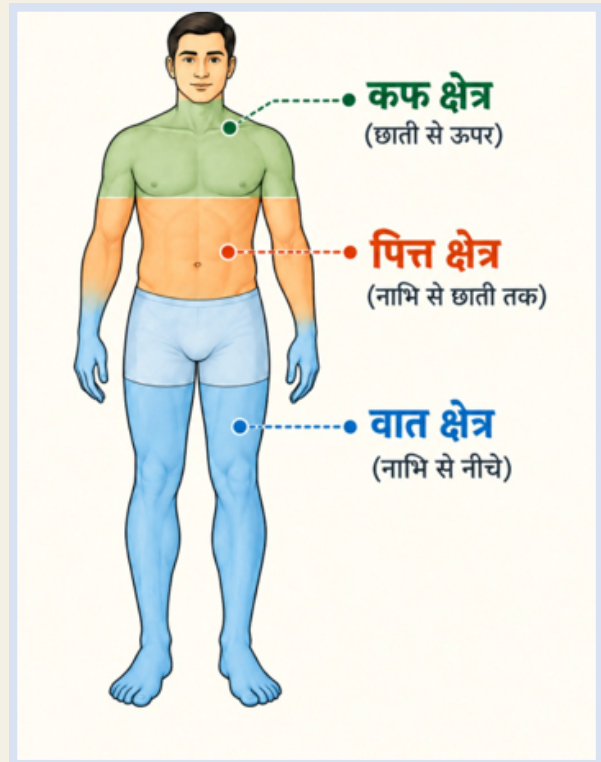
त्रिदोष = वात, पित्त, कफ। त्रिगुण = सत्त्व, रजस, तमस। दोनों आयुर्वेदिक दर्शन में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन दोनों एक ही अवधारणा नहीं हैं।

शरीर का अपना भूगोल

आयुर्वेद शरीर को टुकड़ों में बाँटकर नहीं देखता, फिर भी समझने की सुविधा के लिए दोषों के कुछ प्रमुख स्थान बताए जाते हैं। ऊपर के क्षेत्र को कफ, मध्य को पित्त और निचले भाग को वात की प्रधानता से जोड़ा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि किसी हिस्से में केवल वही दोष होता है; तीनों पूरे शरीर में कार्य करते हैं।

सरल शब्दों में कफ को स्थिरता, संरचना और स्निग्धता; पित्त को पाचन, ऊष्मा और रूपांतरण; तथा वात को गति, संचार और गतिविधि से जोड़ा जाता है। इसलिए यह चित्र शरीर की वास्तविक सीमाएँ नहीं, एक “कार्य-नक्शा” है—जिससे आगे की पूरी चर्चा समझना आसान हो जाता है।

इसे तीन पलड़ों वाली तराजू की तरह समझें। लक्ष्य तीनों को बराबर करना नहीं, बल्कि अपनी स्वाभाविक स्थिति में संतुलित रखना है। किसी एक दिशा में बड़ा बदलाव बाकी तंत्र को भी प्रभावित कर सकता है।



शरीर में दोषों के प्रमुख कार्यक्षेत्र का सांकेतिक मानचित्र

इस चित्र को कैसे समझें?

चित्र में शरीर को तीन रंगों में बाँटना किसी कठोर शारीरिक सीमा का संकेत नहीं है। वात, पित्त और कफ पूरे शरीर में उपस्थित माने जाते हैं, लेकिन आयुर्वेद उनके कुछ प्रमुख कार्यक्षेत्र बताता है। इसलिए ऊपरी भाग में कफ, मध्य भाग में पित्त और निचले भाग में वात दिखाना पाठक को अवधारणा समझाने का सरल तरीका है।

कफ को संरचना, स्थिरता, स्निग्धता और पोषण से जोड़ा जाता है।

पित्त पाचन, ऊष्मा और शरीर में होने वाले रूपांतरण से जुड़ा माना जाता है।

वात गति, संचार और शरीर की विभिन्न गतिविधियों का आधार माना गया है।

इस नक्शे को देखकर यह नहीं मानना चाहिए कि शरीर के किसी हिस्से में केवल एक ही दोष काम करता है। वास्तव में तीनों एक-दूसरे के सहयोग से शरीर की सामान्य क्रियाएँ चलाते हैं। आगे हम देखेंगे कि यही त्रिदोष केवल शरीर के अलग-अलग क्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं

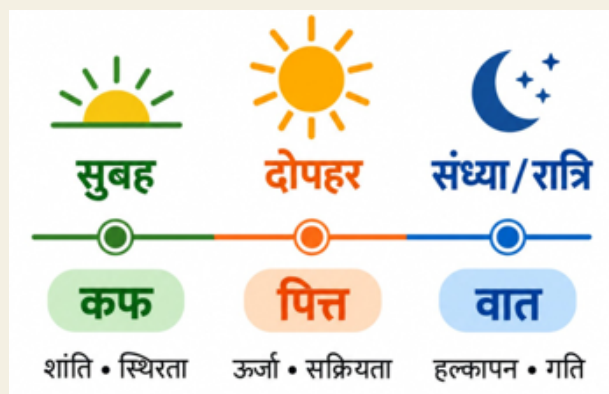


तीन शरीर-प्रवृत्तियों का दृश्य उदाहरण। इसे निदान नहीं, अवधारणा समझाने वाला मॉडल मानें।

एक ही उम्र, फिर भी शरीर इतने अलग क्यों?

किसी परिवार, कार्यालय या मित्र-मंडली को ध्यान से देखिए— एक व्यक्ति बहुत खाकर भी दुबला रहता है, दूसरा मध्यम काया का है और तीसरे का शरीर स्वाभाविक रूप से चौड़ा, भारी और बलिष्ठ होता है। आयुर्वेद इस व्यक्तिगत भिन्नता को “प्रकृति” के माध्यम से समझता है। चित्र में वात को दुबला-पतला और फुर्तीला, पित्त को अपेक्षाकृत हल्की काया के साथ उदर में उभार, और कफ को पूरे शरीर में भारी व मजबूत रूप में दिखाया गया है। यह केवल दृश्य उदाहरण है; वास्तविक प्रकृति केवल पेट, वजन या कंधे देखकर तय नहीं की जाती।

प्रकृति के आकलन में शरीर की बनावट के साथ भूख, पाचन, त्वचा, नींद, ताप-सहनशीलता, गतिविधि, सहनशक्ति और व्यवहार तक अनेक बातें देखी जाती हैं। आधुनिक शोध भी प्रकृति को बहुआयामी मानता है और बताता है कि इसके वैज्ञानिक मापन के तरीके अभी भी विकसित और मानकीकृत किए जा रहे हैं। अधिकांश लोग केवल एक शुद्ध प्रकार के नहीं, बल्कि वात-पित्त, पित्त-कफ या वात-कफ जैसी मिश्रित प्रकृतियों में भी हो सकते हैं।

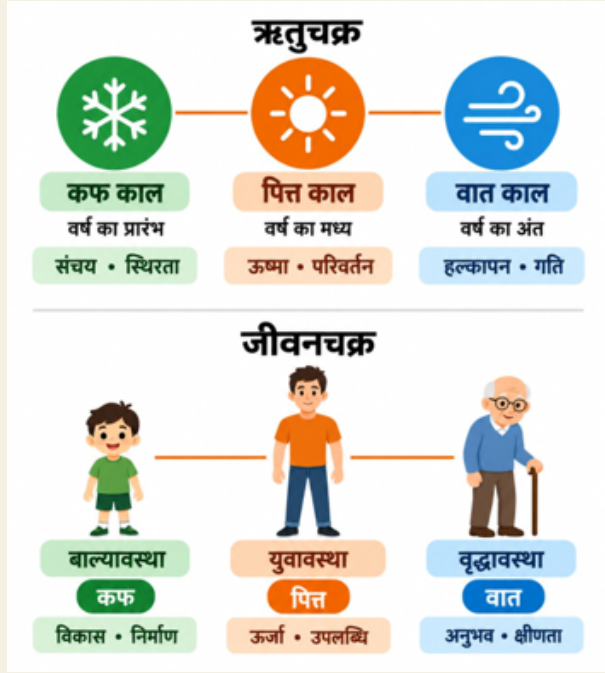


शरीर की अपनी घड़ी

घड़ी केवल दीवार पर नहीं चलती, शरीर के भीतर भी चलती है। आयुर्वेद दिन और रात को दोषों की बदलती लय से जोड़ता है। पारंपरिक समय-विभाजन में लगभग सुबह 6–10 कफ, 10–2 पित्त और 2–6 वात माना जाता है; यही क्रम शाम 6–10, रात 10–2 और रात 2–सुबह 6 में फिर दोहरता है।

इसका व्यावहारिक अर्थ कठोर टाइमटेबल नहीं, बल्कि यह समझ है कि शरीर चौबीस घंटे एक ही मोड में नहीं रहता। सुबह कई लोगों को शरीर खोलने में समय लगता है, दोपहर में भूख स्पष्ट होती है और देर अपराह्न मानसिक गति बढ़ सकती है।

उम्र और ऋतु—दोनों बदलें, तो दिनचर्या भी बदले



ऋतु-भाग ऊपर का एक सरलीकृत दृश्य है; शास्त्रीय ऋतुचर्या छह ऋतुओं में अधिक सूक्ष्म विवरण देती है।

बाल्य से वृद्धावस्था तक

एक बच्चे, चालीस वर्ष के व्यक्ति और सत्तर वर्ष के बुजुर्ग के लिए एक ही भोजन, व्यायाम और दिनचर्या कैसे समान हो सकती है? आयुर्वेद बाल्यावस्था को कफ की वृद्धि और निर्माण से, मध्य आयु को पित्त की सक्रियता और रूपांतरण से, तथा वृद्धावस्था को वात से जुड़ी शुष्कता, हल्केपन और क्षय की प्रवृत्तियों से समझता है।

संदेश बहुत सहज है—बीस वर्ष की उम्र में जो शरीर देर रात, अनियमित भोजन और कठोर व्यायाम सह लेता है, वही आदत साठ वर्ष में बोझ बन सकती है। उम्र के साथ भोजन की मात्रा, पाचन-सुलभता, व्यायाम की तीव्रता और विश्राम की जरूरत पर पुनर्विचार करना स्वास्थ्य-बुद्धि का हिस्सा है।

ऋतुचर्या: मौसम के साथ तालमेल

आयुर्वेद वर्ष को छह ऋतुओं में देखता है और हर ऋतु में आहार-विहार की दिशा बदलने की बात करता है। शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हेमंत—प्रत्येक में तापमान, नमी, हवा, दिन की लंबाई और स्थानीय खाद्य-उपलब्धता बदलती है। शरीर भी इन बदलावों पर प्रतिक्रिया देता है।

ऋतुचर्या: मौसम के साथ तालमेल

आयुर्वेद वर्ष को छह ऋतुओं में देखता है और हर ऋतु में आहार-विहार की दिशा बदलने की बात करता है। शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हेमंत—प्रत्येक में तापमान, नमी, हवा, दिन की लंबाई और स्थानीय खाद्य-उपलब्धता बदलती है। शरीर भी इन

बदलावों पर प्रतिक्रिया देता है। इसीलिए ऋतुचर्या का मूल विचार है: मौसम बदले तो जीवनचर्या भी थोड़ी बदले।

आहार-विहार: एक ही नियम हर समय क्यों नहीं?

यहीं से इस पूरी चर्चा का सबसे व्यावहारिक निष्कर्ष निकलता है। एक ही प्रकार का भोजन हर ऋतु, हर उम्र, हर समय और हर व्यक्ति के लिए समान रूप से उपयुक्त नहीं हो सकता। भारत की पारंपरिक भोजन-संस्कृति में यह समझ बहुत गहराई से दिखाई देती है—मौसम के साथ अनाज, दाल, सब्जियाँ, पेय, मसाले और पकाने के तरीके बदलते रहे हैं। प्रकृति भी वर्ष भर एक जैसी उपज नहीं देती; किसी ऋतु में आम और तरबूज मिलते हैं, किसी में तिल-गुड़, किसी में हरी पत्तेदार सब्जियाँ, तो किसी में अलग प्रकार के कंद और अनाज सहज उपलब्ध होते हैं।

यह केवल स्वाद का प्रश्न नहीं, अनुकूलन का भी प्रश्न है। आयुर्वेद की ऋतुचर्या इसी बात को व्यवस्थित रूप से कहती है कि मौसम बदलने पर शरीर की आवश्यकता और पाचन-क्षमता को देखते हुए आहार-विहार बदला जाना चाहिए।

उसी तरह दिन के समय, आयु और व्यक्ति की मूल प्रकृति को ध्यान में रखकर भोजन की मात्रा, भारीपन, गर्म-ठंडे गुण और दिनचर्या में परिवर्तन किया जा सकता है।

“एक ही थाली हर ऋतु के लिए नहीं, एक ही दिनचर्या हर आयु के लिए नहीं और एक ही नियम हर शरीर के लिए नहीं।” — यही ऋतु, समय, आयु और प्रकृति के अनुसार जीवन को समायोजित करने की मूल भावना है।

अपनी लय पहचानिए — पाँच छोटे सवाल

आयुर्वेद हमें केवल शरीर का प्रकार बताने की कोशिश नहीं करता; वह हमें अपने शरीर के संकेत पहचानना भी सिखाता है। कभी-कभी रोजमर्रा की छोटी बातें ही बहुत कुछ बता देती हैं।

अपने आप से पूछिए—

- क्या मुझे लगभग एक ही समय पर स्वाभाविक भूख लगती है?
- भोजन के बाद शरीर हल्का और सहज लगता है या भारी और सुस्त?
- मौसम बदलते ही कोई खास परेशानी बार-बार लौटती है?
- दिन के किस समय मेरी ऊर्जा सबसे अच्छी और किस समय सबसे कम रहती है?
- उम्र और जीवनशैली बदलने के साथ क्या मेरी नींद, पाचन या सहनशक्ति भी बदली है?

इन प्रश्नों के उत्तर किसी रोग का निदान नहीं करते, लेकिन वे हमें अपने शरीर की लय को पहचानने में मदद कर सकते हैं। यही पहचान आगे भोजन, विश्राम, व्यायाम और दिनचर्या को अधिक समझदारी से चुनने की पहली सीढ़ी बन सकती है।

वात-पित्त-कफ : शरीर और जीवन की लय

है। इसका अर्थ कठोर निषेधों की लंबी सूची नहीं, बल्कि अपने शरीर और परिवेश को पढ़ने की क्षमता विकसित करना है।

हमारे पूर्वजों की भोजन-परंपराएँ इसी व्यावहारिक बुद्धि की अनेक झलकियाँ देती हैं। स्थानीय और मौसमी भोजन का चयन, गर्मियों में हल्कापन और पर्याप्त तरल, वर्षा में स्वच्छ व सुपाच्य भोजन, ठंड में ऊर्जा और पोषण—इन आदतों में पर्यावरण के साथ तालमेल की भावना दिखाई देती है। हर परंपरा को बिना जाँच के चिकित्सकीय सत्य मानना आवश्यक नहीं, पर उसके पीछे छिपे “समय, स्थान और व्यक्ति के अनुसार आचरण” के सिद्धांत को समझना आज भी उपयोगी है।

“एक ही थाली हर ऋतु के लिए नहीं, एक ही दिनचर्या हर आयु के लिए नहीं और एक ही नियम हर शरीर के लिए नहीं।” — यही ऋतु, समय, आयु और प्रकृति के अनुसार जीवन को समायोजित करने की मूल भावना है।

स्वास्थ्य का अर्थ संतुलन को पहचानना है

स्वास्थ्य का उद्देश्य तीनों दोषों को गणित की तरह बराबर करना नहीं, बल्कि अपनी मूल प्रकृति और वर्तमान स्थिति के बीच सामंजस्य बनाए रखना है। पर्याप्त नींद, समय पर और सुपाच्य भोजन, नियमित शारीरिक गतिविधि, तनाव का संतुलन, मौसम

के अनुरूप दिनचर्या और उम्र के अनुसार अपने शरीर की सीमाओं का सम्मान—ये सभी शरीर की सामान्य कार्यक्षमता और रोग-प्रतिरोधक क्षमता को सहारा देने वाली आदतें हैं।

इसे जीवन-संस्कार की तरह भी देखा जा सकता है—आयुर्वेद की भाषा में “स्वस्थवृत्त” की भावना: स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा। उद्देश्य यह नहीं कि जीवन में कभी बीमारी आए ही नहीं, बल्कि शरीर को ऐसा आधार मिले कि वह बदलते समय और परिस्थितियों का बेहतर सामना कर सके। इसके विपरीत यदि नींद, भोजन, श्रम, विश्राम और मौसम से हमारा संबंध लगातार असंतुलित रहे, तो स्वास्थ्य-संबंधी संघर्ष बढ़ सकते हैं।

अंततः वात, पित्त और कफ की चर्चा हमें कोई एक जादुई आहार नहीं देती; वह एक दृष्टि देती है—अपने शरीर को सुनने की, मौसम को पहचानने की और अपनी उम्र तथा जीवन-परिस्थिति के अनुसार आचरण बदलने की। शायद यही भारतीय आयुर्वेदिक कल्पना की सबसे स्थायी सीख है: प्रकृति को जीतना नहीं, उसके साथ समझदारी से चलना।

हेमंत-शिशिर गर्म, पोषक, ताज़ा भोजन; भूख और पाचन के अनुसार।	वसंत हल्का और सुपाच्य; अत्यधिक भारी-तैलीय भोजन सीमित।	ग्रीष्म हल्का, पर्याप्त तरल और मौसमी जल-समृद्ध खाद्य।
वर्षा ताज़ा, स्वच्छ, सुपाच्य भोजन और सुरक्षित पानी।	शरद अत्यधिक तीखा-खट्टा कम; सहज, संतुलित भोजन।	हर ऋतु स्थानीय + मौसमी + अपनी प्रकृति व स्वास्थ्य के अनुसार।

ये सामान्य दिशाएँ हैं, व्यक्तिगत रोग-स्थिति में चिकित्सकीय सलाह अलग हो सकती है।

एक जरूरी सावधानी

प्रकृति की पहचान केवल फोटो, वजन या किसी एक लक्षण से नहीं की जा सकती। लगातार पेट दर्द, रक्तस्राव, तेज वजन-परिवर्तन, सांस की तकलीफ, लंबे समय तक बुखार, गंभीर कमजोरी या अन्य चिंताजनक लक्षणों को केवल “दोष बढ़ना” मानकर न छोड़ें। ऐसी स्थिति में योग्य चिकित्सक से जाँच आवश्यक है। आयुर्वेदिक औषधि, पंचकर्म या विशेष उपचार भी प्रशिक्षित आयुर्वेद चिकित्सक की देखरेख में ही लिए जाने चाहिए।

हम हर ऋतु में एक जैसा भोजन नहीं करते—और प्रकृति भी हर मौसम में हमें एक जैसी उपज नहीं देती। आयु, ऋतु, दिन का समय, वर्तमान स्वास्थ्य और अपनी मूल प्रकृति को समझकर आहार-विहार में छोटे-छोटे बदलाव करना ही इस जीवन-दृष्टि का व्यावहारिक पक्ष है। प्रकृति को बदलना नहीं, उसके साथ सामंजस्य बनाकर चलना—यही स्वस्थ और समर्थ जीवन की दिशा है।

सड़क पर इतना गुस्सा क्यों?

छोटी तक़रार से हिंसा तक — जब कुछ सेकंड का आवेश पूरी जिंदगी की दिशा बदल देता है

हॉर्न की आवाज़ सबसे पहले कान पर नहीं, अक्सर अहं पर चोट करती है। सामने वाले ने रास्ता नहीं दिया, किसी ने अचानक कट मारा, किसी ने लगातार लाइट चमकाई—और कुछ ही सेकंड में सामान्य यातायात “मेरे साथ ऐसा कैसे?” वाली निजी लड़ाई बन जाता है।

रोड रेज को केवल गुस्सैल लोगों की समस्या मानना आसान है। अधिक कठिन और अधिक उपयोगी प्रश्न यह है कि एक सामान्य, शिक्षित और जिम्मेदार व्यक्ति भी सड़क पर किस बिंदु पर अपनी सामान्य समझ से नीचे उतर जाता है। ड्राइविंग एक अनोखी परिस्थिति है: व्यक्ति एक साथ मशीन की शक्ति, गति, निजी जगह, समय का दबाव और लगातार निर्णय संभाल रहा होता है। इसी कारण छोटी-सी उकसाहट भी कभी-कभी वास्तविक घटना से बड़ी मानसिक प्रतिक्रिया पैदा कर देती है।

भारत की सड़कें पहले ही भारी कीमत चुका रही हैं

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के 2024 के आँकड़ों के अनुसार भारत में 4,87,707 सड़क दुर्घटनाएँ दर्ज हुईं। इनमें 1,77,175 लोगों की मृत्यु हुई और 4,71,441 लोग घायल हुए। औसतन यह लगभग 56 दुर्घटनाएँ और 20 मौतें प्रति घंटे हैं। रिपोर्ट में ओवरस्पीडिंग 70.3% सड़क-मौतों से जुड़ी प्रमुख यातायात-उल्लंघन श्रेणी रही।

आँकड़ों का आईना — भारत, 2024

4,87,707 दुर्घटनाएँ | 1,77,175 मौतें

4,71,441 घायल | लगभग 20 मौतें प्रति घंटा

स्रोत: MoRTH, Road Accidents in India 2024

इन आँकड़ों को “रोड रेज के आँकड़े” समझना गलत होगा। हर तेज रफ्तार चालक क्रोधित नहीं होता और हर रोड रेज घटना अलग राष्ट्रीय श्रेणी में दर्ज नहीं होती। लेकिन एक बात स्पष्ट है—रफ्तार और आवेश साथ हों, तो गलती सुधारने के लिए उपलब्ध समय बहुत कम हो जाता है।

30 सेकंड का सवाल

क्या सामने वाले को “सबक” सिखाना जरूरी है—या अपने परिवार तक सुरक्षित पहुँचना?

स्टीयरिंग के पीछे आदमी क्यों बदल जाता है?

2025 में प्रकाशित 148 अध्ययनों की systematic review ने aggressive driving को केवल “बुरा स्वभाव” नहीं माना। शोध में कमजोर self-regulation, भावनाओं को नियंत्रित

करने में कठिनाई, hostile attitudes और कुछ अस्वस्थ cognitive-emotional patterns का संबंध आक्रामक ड्राइविंग से पाया गया। दूसरी ओर बेहतर emotional intelligence और psychological well-being कम आक्रामक व्यवहार से जुड़े थे।



1. प्रतिक्रिया पहले, सोच बाद में

कोई अचानक गाड़ी काट दे या अपमानजनक इशारा कर दे तो शरीर उसे केवल यातायात की गलती नहीं, कभी-कभी चुनौती या खतरे की तरह पढ़ लेता है। लोकप्रिय मनोविज्ञान इसे “amygdala hijack” कहता है। अधिक वैज्ञानिक भाषा में कहें तो तीव्र उत्तेजना के क्षण में परिणाम का आकलन और आत्म-नियंत्रण कमजोर पड़ सकता है। सोचने वाला मस्तिष्क बंद नहीं होता; पर निर्णय की गुणवत्ता गिर सकती है।

2. कार की बंद जगह और दूरी का भ्रम

कार व्यक्ति को सुरक्षा भी देती है और मनोवैज्ञानिक दूरी भी। सामने वाला नाम, परिवार और परिस्थिति वाला इंसान कम और “वह गाड़ी वाला” अधिक लगने लगता है। यही दूरी ऐसी भाषा, हॉर्न, इशारे या पीछा करने को आसान बना सकती है जिसे व्यक्ति आमने-सामने सामान्य परिस्थिति में शायद टाल देता।

3. सड़क पर निकलता है कहीं और का तनाव

हर गुस्सा सड़क पर पैदा नहीं होता। ऑफिस का दबाव, घर की चिंता, नींद की कमी, देर होने का डर और आर्थिक तनाव पहले से भरे पात्र की तरह साथ चलते हैं। फिर कोई छोटा कट या हॉर्न “अंतिम बूंद” बन जाता है। अनुभवी व्यवहार-दृष्टि यही कहती है: व्यक्ति हमेशा सामने वाले की गलती पर नहीं, कई बार अपने भीतर पहले से जमा तनाव पर प्रतिक्रिया कर रहा होता है।

याद रखने की बात

सड़क पर दूसरा चालक आपका विरोधी नहीं है; वह भी किसी घर तक पहुँचने की कोशिश कर रहा एक व्यक्ति है।

गुस्से का मनोविज्ञान, कानून और वह विराम जो सब बदल सकता है

रोड रेज में असली संघर्ष सड़क की जगह से अधिक, “नियंत्रण किसके हाथ में है” की भावना का होता है।

4. “मेरा रास्ता” — अधिकार से अहं तक

कई चालक अनजाने में अपने आगे की जगह को निजी क्षेत्र समझने लगते हैं। “वह मेरे सामने कैसे आया?”, “उसने मुझे ओवरटेक कैसे किया?”—यहीं यातायात की साधारण घटना सम्मान और नियंत्रण की लड़ाई बन जाती है। जिस क्षण सड़क को साझा व्यवस्था के बजाय निजी प्रतिष्ठा का मंच मान लिया जाता है, प्रतिक्रिया अनुपातहीन होने लगती है।

एक वार—और मामला ट्रैफिक से अपराध तक

रोड रेज में सबसे खतरनाक भ्रम यह है कि “बस डराना है” या “दो थप्पड़ में बात खत्म हो जाएगी।” कानून परिणाम, मंशा, चोट और उपलब्ध साक्ष्य को देखता है—गुस्से की अवधि को नहीं। भारतीय न्याय संहिता, 2023 में चोट और गंभीर चोट से जुड़े प्रावधान लागू हो सकते हैं। अत्यंत गंभीर मामलों में परिस्थितियों के आधार पर धारा 103 के तहत हत्या के लिए दंड या धारा 109 के तहत हत्या के प्रयास का प्रश्न भी उठ सकता है।

इसी तरह सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरनाक गति या तरीके से वाहन चलाना मोटर वाहन अधिनियम की धारा 184 के दायरे में आ सकता है। इसलिए गाड़ी से उतरने से पहले यह प्रश्न उपयोगी है: जिसे मैं पाँच मिनट बाद भूल सकता था, क्या उसके लिए वर्षों तक कानूनी परिणाम झेलना चाहता हूँ?

क्षणिक आवेश की दीर्घ कीमत

एक मिनट का अहं — अस्पताल, पुलिस, अदालत, आर्थिक नुकसान और दो परिवारों पर वर्षों का मानसिक बोझ।

वीडियो से पहले मदद

यदि दुर्घटना हो चुकी हो, तो पहली प्राथमिकता दृश्य रिकॉर्ड करना नहीं, सुरक्षा और सहायता होनी चाहिए। मोटर वाहन अधिनियम की धारा 134A Good Samaritan को कानूनी सुरक्षा देती है। सुरक्षित स्थिति में आपात सहायता बुलाएँ और घायल को समय पर मदद दिलाएँ।

30 सेकंड की कीमत

थोड़ा धैर्य	गुस्से की प्रतिक्रिया
- सुरक्षित घर वापसी - तनाव का अंत - परिवार की शांति	- चोट / दुर्घटना - पुलिस व कानूनी मामला - अस्पताल / अदालत / जेल

गुस्सा आए तो—पहले 5 सेकंड रुकिए

- तुरंत जवाब मत दीजिए; तीन धीमी साँस लें और हाथ स्टीयरिंग पर ही रखें।
- वाहन से उतरकर बहस न करें; सुरक्षित दूरी बनाना कमजोरी नहीं, नियंत्रण है।
- पीछा करना, रास्ता रोकना या “समझाने” के लिए वाहन अड़ाना स्थिति को बढ़ाता है।
- यदि सामने वाला पीछा करे या वास्तविक खतरा लगे, सुरक्षित सार्वजनिक स्थान/पुलिस सहायता की ओर जाएँ; जरूरत पर 112 पर कॉल करें।
- लक्ष्य बहस जीतना नहीं—स्थिति को बढ़ने से रोकना है।

मन का छोटा अभ्यास

अपने आप से केवल एक प्रश्न पूछें: “क्या मैं पाँच मिनट बाद भी इसी बात को इतना महत्वपूर्ण मानूँगा?” यह प्रश्न अहं से परिणाम की ओर ध्यान वापस लाता है।

सड़क रणभूमि नहीं है

कभी-कभी सामने वाला सचमुच गलत होगा। उसने कट मारा होगा, हॉर्न ज्यादा बजाया होगा या आपकी गाड़ी छू दी होगी। लेकिन उसकी गलती आपको अपना भविष्य उसके हाथ में देने के लिए बाध्य नहीं करती। परिपक्वता का अर्थ अपमान महसूस न करना नहीं; अपमान महसूस होने पर भी अपने अगले कदम का मालिक बने रहना है।

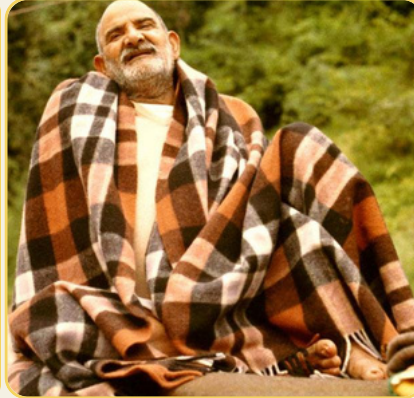
सड़क पर सबसे बड़ा विजेता वह नहीं जो पहले निकल गया। वह है जो उत्तेजना के क्षण में भी अपने व्यवहार का नियंत्रण नहीं खोता—और अपने घर सुरक्षित पहुँचता है।

अंतिम बात

“सबसे जरूरी ब्रेक कभी-कभी गाड़ी का नहीं—अपने गुस्से का होता है।”

‘हनुमान अंश’: जब दर्शक ने फिल्म खोजी, फिल्म ने दर्शक नहीं खरीदे

₹1.8 करोड़ की फिल्म का ₹300 करोड़ पार करना केवल बॉक्स ऑफिस की कहानी नहीं; यह उस युवा भारत की भी झलक है जो आधुनिकता के बीच अपनी सांस्कृतिक जड़ों को नए ढंग से खोज रहा है।



सिनेमा में सफलता का एक जाना-पहचाना फार्मूला है—बड़ा सितारा, बड़ा बजट, बड़ा प्रचार और पहले सप्ताह में बड़ी कमाई। ‘हनुमान अंश’ ने इस गणित को उलट दिया। 7 अगस्त को लगभग ₹10 लाख की मामूली शुरुआत करने वाली फिल्म पहले दो सप्ताह में मुश्किल से ₹1.5 करोड़ तक पहुँची थी। लेकिन फिर वह हुआ जिसे विज्ञापन एजेंसियाँ खरीद नहीं सकती—दर्शकों ने फिल्म के बारे में एक-दूसरे को बताना शुरू किया। शो बढ़े, सिनेमाघर बढ़े और छठे सप्ताह तक फिल्म का वैश्विक कारोबार ₹300 करोड़ के पार पहुँच गया। 48 वें दिन विश्वव्यापी ग्रॉस लगभग **₹372.2 करोड़** बताया गया।

सवाल फिल्म से बड़ा है—युवा इससे क्यों जुड़ा?

‘हनुमान अंश’ को केवल धार्मिक फिल्म कहकर उसकी सफलता को समझना शायद पर्याप्त नहीं होगा। क्योंकि इसी समय भारतीय शहरों में एक दूसरी सांस्कृतिक प्रवृत्ति भी दिखाई दे रही है—भजन क्लबिंग, कीर्तन नाइट्स और आधुनिक संगीत के बीच आध्यात्मिक अभिव्यक्ति।

मुंबई से दिल्ली तक युवा ऐसे आयोजनों में पहुँच रहे हैं जहाँ इलेक्ट्रिक गिटार और ड्रम भी हैं, आधुनिक लाइटिंग भी, लेकिन स्वर ‘अच्युतम केशवम्’ और ‘रघुपति राघव’ के हैं। Vogue India ने मई 2026 में इसे Gen-Z द्वारा spirituality को नए रूप में व्यक्त करने वाली प्रवृत्ति के रूप में दर्ज किया; अन्य रिपोर्टों में भी ऐसे आयोजनों में आधुनिक क्लब-संस्कृति की ऊर्जा और भक्ति-संगीत के मेल का उल्लेख मिलता है।

यहाँ एक महत्वपूर्ण बात समझनी होगी। अपनी जड़ों की ओर लौटना हमेशा अतीत की हूबहू नकल करना नहीं होता। नई पीढ़ी परंपरा को अपने समय की भाषा देती है—कभी पॉडकास्ट में, कभी रील में, कभी लाइव म्यूजिक में और कभी सिनेमा में।

आधुनिकता और परंपरा हमेशा एक-दूसरे की विरोधी नहीं होतीं।

कभी-कभी नई पीढ़ी आधुनिक साधनों से ही पुरानी स्मृतियों तक पहुँचती है।

एक नजर में — असाधारण सफर

- रिपोर्टेड बजट: लगभग **₹1.8 करोड़**
- पहला दिन: लगभग ₹10 लाख

- पहले दो सप्ताह: करीब ₹1.5 करोड़
- 42 दिन बाद: करीब ₹309.15 करोड़ वैश्विक ग्रॉस
- 11 सितंबर: Hombale Films के माध्यम से overseas theatrical release
- छठे सप्ताह तक: नई बड़ी रिलीजों के बीच भी मजबूत थिएटर उपस्थिति

अब कहानी भारत की सीमाओं से बाहर

11 सितंबर से फिल्म का अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन शुरू हुआ और Hombale Films ने overseas release संभाली। यह बदलाव उल्लेखनीय है—जो फिल्म शुरुआती दिनों में अपने देश में पर्याप्त स्क्रीन पाने के लिए संघर्ष कर रही थी, वही कुछ सप्ताह बाद वैश्विक सिनेमाघरों तक पहुँची।

और फिर एक दिलचस्प संकेत ब्रिटेन से आया। प्रतिष्ठित ब्रिटिश अखबार The Times ने भी फिल्म की अप्रत्याशित सफलता पर विस्तार से लिखा और इसे नीब करौरी बाबा के जीवन से प्रेरित एक “surprise cinema hit” के रूप में प्रस्तुत किया। विदेशी मीडिया के लिए कहानी केवल भारतीय बॉक्स ऑफिस की नहीं थी; नीब करौरी बाबा का वह वैश्विक आध्यात्मिक प्रभाव भी था जिसने दशकों पहले पश्चिमी साधकों और बाद में तकनीक-जगत की चर्चित हस्तियों तक ध्यान खींचा था।

क्या यह सिर्फ धार्मिक सिनेमा की सफलता है?

शायद नहीं। किसी एक फिल्म की सफलता से पूरी युवा पीढ़ी की मनःस्थिति नहीं पढ़ी जा सकती, लेकिन ‘हनुमान अंश’ एक संकेत जरूर देती है—**दर्शक अब केवल सितारा नहीं, संबंध खोजता है।**

इसकी कहानी सिनेमा से आगे संस्कृति, पीढ़ीगत बदलाव, डिजिटल वर्ड-of-mouth और भारतीय आध्यात्मिकता के वैश्विक प्रसार तक जाती है। शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यही है कि **आधुनिकता और परंपरा हमेशा एक-दूसरे की विरोधी नहीं होतीं।** नई पीढ़ी अपनी जड़ों की ओर लौट सकती है—लेकिन अपने रास्ते, अपनी भाषा और अपने समय के माध्यमों के साथ।

यही ‘हनुमान अंश’ की सफलता को बॉक्स ऑफिस से आगे एक सामाजिक-सांस्कृतिक संकेत बना देता है।

साझा मंच, साझा जिम्मेदारी

पढ़ें • लिखें • जुड़ें • आगे बढ़ाएँ

भारतीय ज्ञान समाधान — केवल पत्रिका नहीं, सहभागिता का मंच

भारतीय ज्ञान समाधान का उद्देश्य ज्ञान, संस्कृति, शिक्षा, पर्यावरण, विज्ञान, समाज और समसामयिक विषयों पर सार्थक संवाद को बढ़ावा देना है। यह मंच पाठकों को केवल जानकारी देने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें विचार, अनुभव और समाधान साझा करने के लिए जोड़ने का प्रयास है।

आप कैसे जुड़ सकते हैं?

- ◆ लेख/विश्लेषण भेजें — तथ्यपरक, मौलिक और जनोपयोगी विषयों पर।
- ◆ स्थानीय प्रेरक पहल साझा करें — शिक्षा, पर्यावरण, कौशल, संस्कृति या सामाजिक नवाचार से जुड़ी।
- ◆ सुझाव और प्रतिक्रिया दें — पत्रिका को अधिक उपयोगी, पठनीय और विश्वसनीय बनाने के लिए।
- ◆ संस्थागत सहभागिता — विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, सामाजिक संस्था एवं विषय-विशेषज्ञ ज्ञान-साझेदारी में जुड़ सकते हैं।

सदस्यता / पाठक सहभागिता

नाम: _____
संस्था/पद: _____
मोबाइल: _____
ई-मेल: _____
शहर/जिला: _____
रुचि क्षेत्र: ☐ शिक्षा ☐ पर्यावरण ☐ संस्कृति ☐ विज्ञान/
तकनीक ☐ समाज ☐ अन्य



QR स्कैन कर सदस्यता / लेख / सुझाव का विवरण भरें

मोबाइल: 9111511188 • Print / Digital
info@bhartiyagyansamadhan.in



संपादक की ओर से

डॉ. अनुज कुमार नारद

संपादक, भारतीय ज्ञान समाधान

हमारा विश्वास है कि ज्ञान तभी सार्थक है, जब वह समाज तक पहुँचे, संवाद पैदा करे और समाधान की दिशा दिखाए। भारतीय ज्ञान समाधान इसी साझा यात्रा का मंच है—जहाँ पाठक, लेखक, शिक्षक, युवा, विशेषज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता एक-दूसरे के अनुभवों से सीख सकें।

“हम पाठक नहीं, ज्ञान-सहभागी बनें—यही भारतीय ज्ञान समाधान की मूल भावना है।”

संपादकीय नीति

- तथ्य, स्रोत और प्रमाण को प्राथमिकता।
- विचारों की विविधता का सम्मान; भाषा संयत और संवादपरक।
- प्रकाशित सामग्री का संपादन, संक्षेपण अथवा शीर्षक परिवर्तन संपादकीय आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है।
- लेख में व्यक्त विचारों की जिम्मेदारी संबंधित लेखक की होगी।

हमारे प्रमुख विषय

भारतीय ज्ञान एवं संस्कृति

शिक्षा एवं कौशल

पर्यावरण एवं जल

विज्ञान एवं डिजिटल

समाज एवं समसामयिकी

नीति एवं जनहित

प्रकाशन एवं वैधानिक सूचना

“पत्रिका से संबंधित किसी भी दावा, आपत्ति, विवाद अथवा कानूनी कार्यवाही के लिए न्याय क्षेत्र दुर्ग (छत्तीसगढ़) न्यायालय रहेगा।”



सेवा के
25वर्ष
सुरासन। गरीब कल्याण। राष्ट्र निर्माण

जनसेवा हेतु सेवा सेतु

जनता के द्वार, डिजिटल सरकार

दफ्तरों के
चक्कर खत्म



जाति
प्रमाण पत्र



आय
प्रमाण पत्र



निवास
प्रमाण पत्र



राशन
कार्ड



पेंशन

सरकारी सेवाएं घर बैठे
एक क्लिक में



अधिक
जानकारी हेतु
► स्कैन करें
या विजिट करें

sewasetu.cgstate.gov.in



92034 06400



भारतीय ज्ञान समाधान

शाश्वत ज्ञान, अनंत संभावनाएँ